(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 54, अंक 7, जनवरी, 2019
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

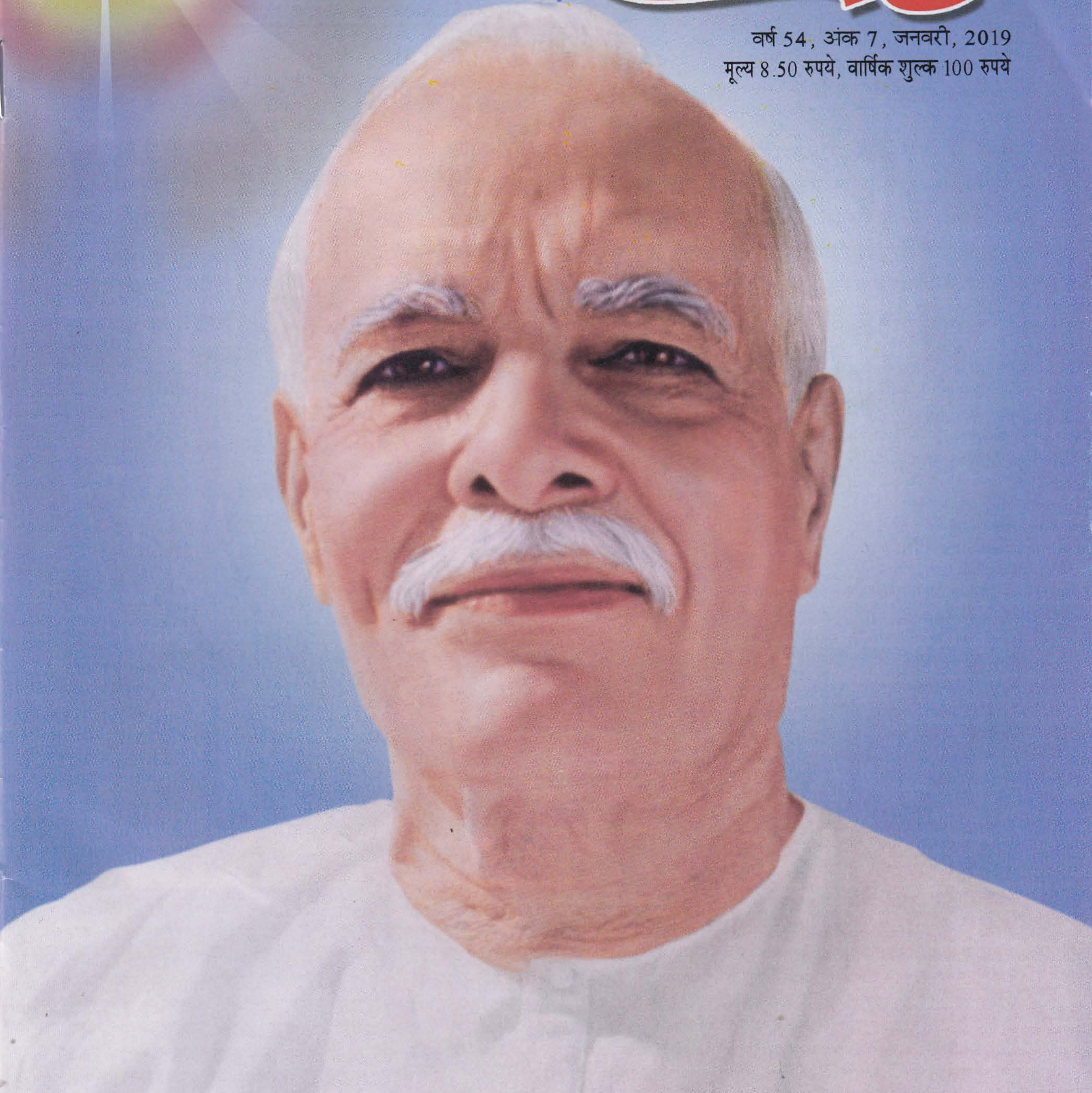

पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा
स्मृति दिवस विशेषांक

1

2

3

4

5

6

7

8

1.नवरंगपुर- आनंद सरोवर के आधारशिला समारोह का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी के उपकुलपति प्रो.भ्राता सचिदानंद मोहन्ती, विधायक भ्राता भुजबल माझी, विधायक भ्राता मनोहर रंधारी, ब्र.कु.नीलम बहन, ब्र.कु.आशा बहन, जिलाधीश डॉ.अजीत कुमार मिश्रा तथा अन्य। **2.ओ.आर.सी (गुरुग्राम)-** अखिल भारतीय गीता महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, स्वामी विवेकानंद जी महाराज, स्वामी ईश्वरदास जी महाराज, ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, डॉ.एस.एम.मिश्रा, ब्र.कु.मनोरमा बहन तथा अन्य। **3.नरवाना-** उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम प्रोफेसर भ्राता गणेशी लाल जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सीमा बहन। **4.सोनीपत-** दादी जानकी ऑडिटोरिएम का उद्घाटन करते हुए हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता मनोहर लाल खट्टर, राजयोगिनी दादी जानकी जी, सांसद भ्राता रमेश कौशिक, हरियाणा की केबिनेट मंत्री बहन कविता जैन, ब्र.कु.हंसा बहन, न्यायमूर्ति भ्राता ए.एन.जिंदल तथा ब्र.कु.अमीरचन्द भाई। **5.मनाली-** हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता जयराम ठाकुर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.संध्या बहन। साथ में हैं खेल व परिवहन मंत्री भ्राता गोविंद सिंह ठाकुर। **6.रायपुर-** ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाई जी की तृतीय पुण्यतिथि पर आयोजित मीडिया संवाद कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.उर्मिला बहन। मंचासीन हैं कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.मानसिंह परमार जी, प्रेस कौंसिल ऑफ इण्डिया के सदस्य भ्राता प्रदीप कुमार जैन, ब्र.कु.कमला बहन, वरिष्ठ पत्रकार भ्राता रमेश नैय्यर जी, आई.बी.सी.24 चैनल के मुख्य सम्पादक भ्राता रविकान्त मित्तल, भ्राता कमल दीक्षित तथा अन्य वरिष्ठ मीडियाकर्मी। **7.फतेहाबाद-** नवनिर्मित ज्ञान-विज्ञान भवन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी। साथ में उपायुक्त डॉ.जे.के.अभीर, ब्र.कु.अमीरचंद भाई, ब्र.कु.सीता बहन, ब्र.कु.मदन भाई, ब्र.कु.दीपक भाई तथा अन्य। **8.वडोदरा (अटलादरा)-** राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी के द्वारा सेवाकेन्द्र के 15वें वार्षिकोत्सव का उद्घाटन होने के बाद मंच पर उपस्थित हैं ब्र.कु.अरुणा बहन, ब्र.कु.पूनम बहन, उपायुक्त भ्राता पंकज औंधियाजी एवं जनसमूह।

ऐसे मिला मुझे साहित्य लिखने का वरदान

जब मैं पहली बार मधुबन में आया था, तब यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय पाण्डव भवन में नहीं था, बृजकोठी में था। जिस कमरे में मैं ठहरा हुआ था उसमें और तीन-चार भाई थे क्योंकि कमरा बड़ा था। रात्रि की क्लास समाप्त होने के बाद हम लोग विश्राम करने के लिए अपने-अपने कमरे में जा रहे थे तो उतने में बाबा ने कहा, ''बच्चे, भारत के राष्ट्रपति को चिट्ठी लिखनी है। आप लोगों ने अनुभव किया है कि शिव बाबा निराकार, प्रजापिता ब्रह्मा के साकार तन में प्रवेश कर कैसे नयी सृष्टि की स्थापना कर रहे हैं। आप उनको निमंत्रण दो कि आप भी इसको जानकर अपना पूरा वर्सा लो। अब नहीं तो कभी नहीं। ऐसा एक पत्र उनको लिखना है, अंग्रेजी में भी और हिन्दी में भी। उसको पढ़कर वे यहाँ आयें और बाप से मिलें और अपना जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करें।" बाबा ने यह आदेश दिया और पूछा कि कौन-कौन लिखेंगे? मैंने भी हाथ उठाया कि मैं लिखूँगा। हाथ उठाने वालों में हमारे कमरे वाले भी थे। उनमें एक बहुत बड़ी कंपनी के जनरल मैनेजर थे। उनका काम था पत्र-व्यवहार (Correspondance) का। पत्र-व्यवहार बहुत बड़ी चीज होती है किसी भी व्यवसाय में। दूसरे, सांसद थे। तीसरे, किसी विश्वविद्यालय के प्राध्यापक थे। चौथे, किसी ऑफिस के अधीक्षक (Superintendent) थे। इन लोगों ने भी हाथ उठाया। बाबा ने कहा, हाँ बच्चे, आज लिख देना, कल सुबह दिखा देना।

मैं तो वैसे लेखक तो नहीं था

ऐसे तो संसार में इतने अच्छे-अच्छे लेखक हैं, जो लिखते हैं तो लाखों की संख्या में पुस्तकें बिकती हैं, लोग पढ़ते हैं और उन्हें पुरस्कार भी मिलते हैं। मैं वैसे तो लेखक नहीं था लेकिन पढ़ने वालों को स्पष्ट रूप में समझ में आने जैसा कुछ लिख सकता था। जब बाबा ने कहा लिखने के लिए तो मेरा भी मन हुआ कि चलो, बाबा की सेवा हो सकती है तो मैं भी लिख दूँ।

हुआ यह कि जब हम कमरे में गये तो बत्ती बुझ गयी। उन दिनों सुबह की क्लास साढ़े चार बजे होती थी। चार से साढ़े चार बजे तक योग होता था, उसके बाद मम्मा आती थीं, वाणी चलाती थीं और उसके बाद बाबा आते थे, मुरली सुनाते थे। सुबह तो नहाने-धोने, क्लास में जाने का समय होता था, यही समय (रात का) था लिखने का। जब बत्ती बुझ गयी तो कैसे लिखें? हमारे कमरे में और जो भी लिखने वाले थे, सब सोचने लगे कि बत्ती नहीं तो लिखें कैसे? अब अन्धेरा हो गया, चलो सो जाते हैं; कल देखेंगे। अगर बाबा पूछेंगे तो कह देंगें कि बाबा, अंधेरा हो गया था।

अमृत-सूची

❋ ऐसे मिला मुझे साहित्य लिखने का वरदान	3
❋ कन्याओं द्वारा क्रान्ति (सम्पादकीय)	7
❋ पत्र सम्पादक के नाम	10
❋ बाबा का व्यक्तित्व दिव्य, भव्य और शालीनतापूर्ण था	11
❋ परमात्म पालना एवं छत्रछाया में 21 वर्ष	15
❋ बाबा ने कहा, बच्ची बहुत शुद्ध है	18
❋ बाबा ने कहा, बच्ची अपना फैसला खुद करेगी	20
❋ बाबा ने कहा, 'तुम सफलता का सितारा हो'	21
❋ उठो युवा	22
❋ दिव्य ज्ञान का मधुर फल	25
❋ मानी और माखन का वो स्वाद	26
❋ बाबा बना देता है हर मुश्किल आसान	27
❋ साकार मिलन की सुखदाई यादें	28
❋ प्यारे बाबा ने मेरी छठी मनाई	31
❋ सचित्र सेवा समाचार	32

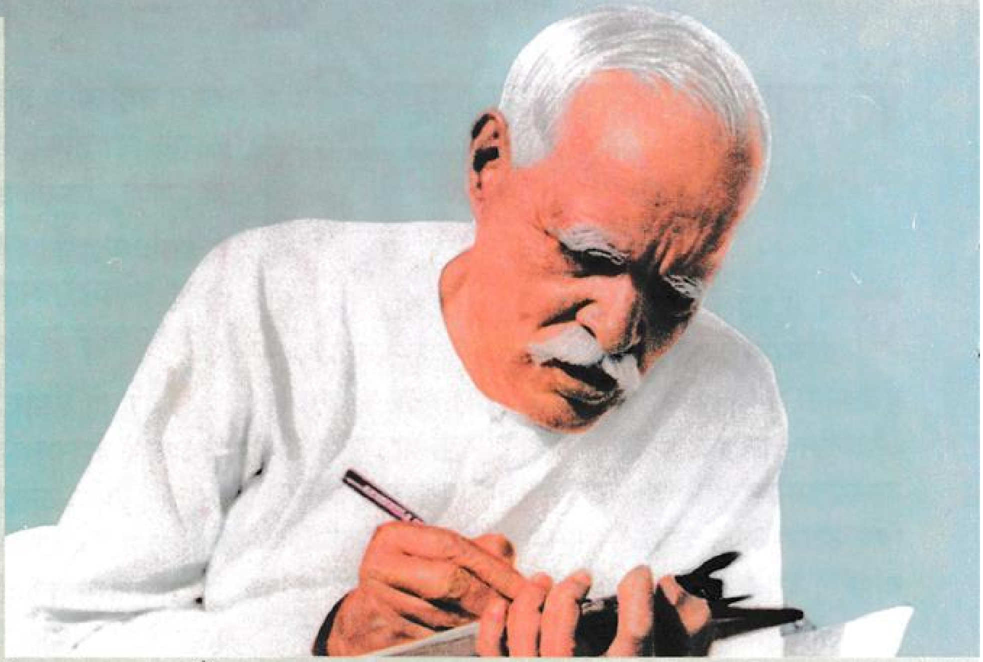

मैंने ठान लिया कि मुझे लिखना है

मैंने सोचा कि मेरे लिए तो यह बाबा का पहला आदेश है, सद्गुरु कह दीजिये, शिक्षक कह दीजिये, पिता कह दीजिये, उनका मेरे प्रति यह पहला फरमान है। यदि हम कहेंगे कि हम नहीं करेंगे, तो यह अवज्ञा करने की आदत पड़ जायेगी। शिवबाबा तो त्रिकालदर्शी हैं, उनको मालूम रहा होगा कि लाइट चली जायेगी, उसके बावजूद भी उन्होंने कहा है कि कल लिख लाना अत: मैं तो लिखकर ले जाऊँगा। अन्य भाई लोग मेरा मजाक उड़ायें कि यह अन्धेरे में कैसे लिखेगा? इसकी आँखें कोई बिल्ली की आँखें हैं क्या जो अन्धेरे में भी देख पायेगा! वे आपस में मेरे ऊपर अट्टहास करने लगे, हा-हा करने लगे। मैंने सोचा, ठीक है, अपना-अपना विचार है। मैं तो लिख डालूँगा कैसे भी करके।

उन दिनों वहाँ की जमीन ठीक नहीं थी, ऊँच-नीच थी। इसलिए विश्वरतन दादा ने मुझे एक टार्च दी थी। मैंने सोचा कि टार्च ऑन करके लिख दूँ। टॉर्च ऑन की तो वो भी ऐसे ही थी, रोशनी कम थी कि उसमें लिखना संभव नहीं था। जब टॉर्च ऑन की तब उस पर भी वे हँस पड़े कि यह समय व्यर्थ कर रहा है। मैंने कहा, भाई, मैं तो लिखूँगा जरूर। फिर मैंने बाहर देखा तो नीचे रोड पर स्ट्रीट लाइट जल रही थी। मैंने सोचा कि वहाँ जाकर लिख लूँ। उन दिनों कड़ाके की सर्दी थी। वहाँ जाकर मैंने पहले हिन्दी में लिखा, उसको पढ़ा, ठीक किया फिर उसको दुबारा लिखा एक अच्छे कागज पर क्योंकि शिव बाबा को दिखाना है जो सबसे बड़ी अथॉरिटी है। फिर अंग्रेजी में लिखना शुरू किया। अंग्रेजी की शैली अलग होती है। एकदम सौ प्रतिशत अनुवाद नहीं हो सकता। उसको लिखकर फिर ठीक किया, उसको दुबारा अच्छे कागज पर लिखा। उतने में सुबह के लगभग तीन-साढ़े तीन बज गये। जब मैं कमरे में गया तो गीत बज रहा था, ''जाग सजनिया जाग...''। तब जो सोये थे, वे भाई भी उठ खड़े हो गये। उन्होंने देखा कि मैं नीचे से आ रहा हूँ। रात को उन्होंने देखा कि यह नीचे जा रहा है, उस समय उन्होंने मना किया था। वे जानते थे कि इसने सारी रात सोया नहीं, रातभर लिखकर आया है। उन्होंने यह भी सोचा कि बाबा तो वृद्ध आदमी हैं, वृद्ध आदमी बहुत-सी बातें भूल जाते हैं। उन्होंने यह भी सोचा कि पता नहीं कल सुबह बाबा पूछेंगे या नहीं पूछेंगे, यह बिना मतलब क्यों इतना सीरियस हो रहा है, कमरे में लाइट न होते हुए भी बाहर जाकर लिखने जा रहा है। उनके व्यवहार से मुझे ऐसा लगा कि उन्होंने बाबा को पहचाना नहीं है। जैसे बाबा कहते हैं कि मैं साधारण तन में आता हूँ, बहुत कम लोग हैं जो मुझे पहचानते हैं। उसी प्रकार, मैं समझता हूँ कि उन्होंने साधारण तन को ही देखा, उनमें विराजमान सर्वशक्तिमान परमात्मा को नहीं पहचाना। थोड़े समय के बाद वे ज्ञान से चले गये।

पहाड़ी पर बाबा ने पूछा

उसके बाद हम सब सुबह क्लास में गये, बाबा ने मुरली सुनायी पर इसके बारे में कुछ कहा नहीं। मैं भी नया था, वे भी नये थे। उन्होंने समझा कि बाबा भूल गया, क्लास में उसके बारे में कुछ पूछा ही नहीं। याद होता तो बाबा पूछते थे ना! मुरली पूरी हो गयी, क्लास खत्म हो गयी। अन्य भाई-बहनें उठकर भी चले गये और हम भी खड़े हो गये। खड़े होने के बाद भी बाबा ने नहीं पूछा।

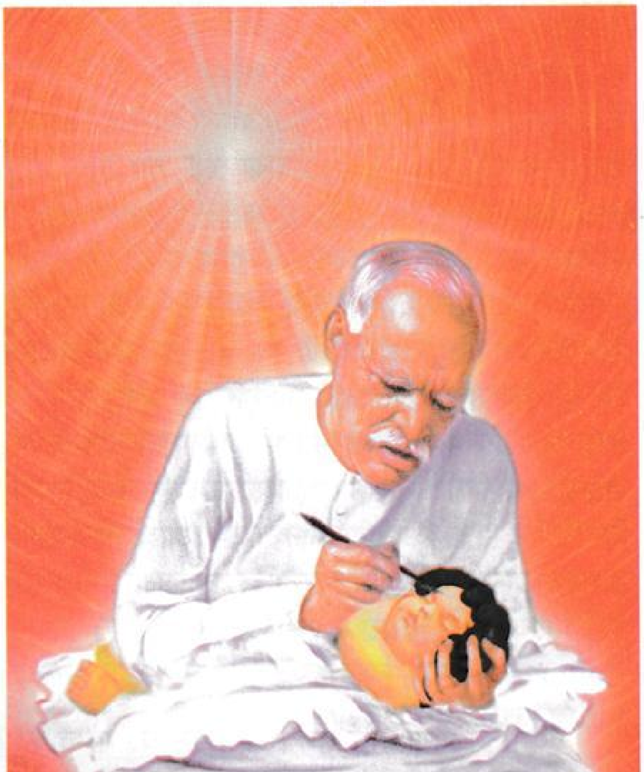

उन्होंने सोचा, अच्छा हुआ, हमने लिखा नहीं, कम-से-कम रातभर तो सोये। यह आदमी ऐसे ही जागता रहा। क्लास समाप्त हुआ, बाबा खड़े हुए और कहा, बच्चे, आज पिकनिक करने पहाड़ी पर चलेंगे, नाश्ता सब वहीं करेंगे। आधे घंटे में सब तैयार हो जाओ। बाबा पहाड़ी पर ले गये। वहाँ बाबा ने महावाक्य सुनाये, मम्मा ने भी सुनाये। उस वक्त भी लिखत के बारे में कुछ बोला नहीं। वे बार-बार मेरी तरफ देखते थे, कुछ इशारे भी कर रहे थे जैसे कि मुझे डिफीट (पराजय का संकेत) दे रहे थे। मैं तो चुप था। उसके बाद बाबा ने कहा, अच्छा बच्चे, रात को मैंने लिखने के लिए कहा था, कौन-कौन लिख लाया? मैंने सिर नीचे कर लिया, शर्म आनी चाहिए थी उनको, आ गयी मुझको। बेचारे वे शर्मिन्दा तो हो गये। मैंने कुछ नहीं कहा, कहा उन्होंने ही कि बाबा, रात को अन्धेरा था, हम नहीं लिख पाये, जगदीश भाई ने लिखा है।

बाबा के प्रति वो मेरा श्रद्धा का फूल था

फिर बाबा ने मेरे से कहा, अच्छा बच्चे, क्या लिख लाये हो, पढ़ो। मैंने पढ़ा। लेख इतना चमत्कारी नहीं था, साधारण ही था। सिर्फ जो कहना था उसको स्पष्ट रूप से कहा था। वो मेरा श्रद्धा का फूल था बाबा के प्रति, वो मेरी भावना थी बाबा के प्रति। उसमें कोई विशेष शैली, चमत्कार नहीं था। बाबा की आज्ञा का पालन करने के लिए ही तो लिखा था। मैंने सुनाया। बाबा तो भोलानाथ है, बच्चों पर सब-कुछ लुटाने वाला है, उसको अपने बच्चे को आगे बढ़ाना था तो अपने वरदानी महावाक्य बोले कि ''बच्चे, इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का साहित्य लिखने का बाबा आपको वरदान देता है।" उसी दिन से बाबा ने मुझे कहा कि ''ईश्वरीय विश्व विद्यालय के ज्ञान को कहीं भी पेश करने के लिए मुख्य वक्ता आप ही हो।" यह तो मेरे लिए एक आश्चर्य था, अजीब-सी बात थी। मैंने यह सोचा भी नहीं था। शुरू से ही बाबा में मेरी जो भावना थी, स्नेह था, श्रद्धा थी, अगाध प्यार था उसके लिए मैंने यह लिखने का काम किया था।

मेरे लिए भोलेनाथ की यह अकारण कृपा थी

जब बाबा ने यह कहा तो एक मिनट मेरा मन चला बड़ी तेज रफ्तार से, अगर मैं लोगों के सामने ज्ञान रखूँगा तो पहले खुद को समझना पड़ेगा, खुद नहीं समझूँगा तो उनके सामने कैसे रखूँगा? इसका मतलब यह है कि बाबा ने मेरी बुद्धि का ताला खोल दिया। जब बाबा मुझे निमित्त बनायेंगे तो पहले मुझे ही समझायेंगे। इसका अर्थ है कि पहले मेरा कल्याण होगा। यह तो बहुत बड़ी बात है कि मैं ईश्वरीय ज्ञान को समझ पाऊँगा। मैं इसको बारीकी से नहीं समझूँगा तो दूसरों को कैसे समझाऊँगा? यह तो बाबा ने मेरा कल्याण कर दिया। एक चिट्ठी मैंने बाबा को लिखी कि बाबा, आपने सारा ही खजाना मुझे दे दिया। यह किसी मनुष्य का ज्ञान नहीं है, मनुष्य को समझना आसान होता है क्योंकि दोनों के स्तर मनुष्य के हैं। ज्ञान के सागर भगवान को समझना, उसके गंभीर ज्ञान को समझना, यह बहुत बड़ी बात है। मुझे खुशी हुई कि उस गंभीर ज्ञान को समझने योग्य बाबा मुझे बनायेगा। मेरी बुद्धि को इतना वरदान देगा, शक्ति देगा, तो मैंने सोचा कि बाबा ने तो

जब हम वह करते हैं जिसे करने से हम डरते हैं तब हमारे भीतर निडरता का जन्म होता है।

मुझे मालामाल कर दिया। मेरी आँखें गीली हो गयीं। मुझे ऐसा लगा कि ओहो! एक पल में बाबा ने मुझे क्या दे दिया! मैं लिखूँगा, वो छपेगा और संसार के सामने जायेगा, उसके द्वारा सेवा हो जायेगी, उनके आशीर्वाद मुझे मिलेंगे। बाबा ने मुझे इतना दे दिया, इतना दे दिया कि मुझे अपार कृपा, अकारण कृपा मिल गयी। बाबा को कहते हैं कृपालु, दयालु, वरदानों के भंडार, भोले भंडारी हैं। यह उसकी पहली झलक थी, पहला स्वरूप था।

बाबा ने कहा, मम्मा इसकी बुद्धि में बैठ जाओ

इसके बाद भी ऐसी कई घटनाएँ हुईं। एक बार, मम्मा भी बैठी थी, मैं भी बैठा था चेम्बर में क्लास के बाद। मम्मा तो माँ सरस्वती है ही। बाबा ने मम्मा को संबोधित करते हुए हम सबको, जो वहाँ बैठे थे, कहा कि यह तो साक्षात् सरस्वती है। मम्मा तुम इसकी बुद्धि में बैठ गयी हो? यह बाबा ने कहा मम्मा को। मम्मा का स्वाभाविक संस्कार कहो, स्वभाव कहो यह था कि बाबा जो भी कहे, उसके लिए ''हाँ जी" कहना। अगर बाबा कहे, तुम उल्लू हो, उसके लिए भी मम्मा ''जी बाबा" कहती थी। जब बाबा ने यह बात कही कि मम्मा तुम इसकी बुद्धि में बैठी हो, मम्मा ने कहा, हाँ बाबा। मुझे बड़ी खुशी हुई कि साक्षात् सरस्वती, जो विद्या की देवी हैं, वो भी मुझे आशीर्वाद दे रही हैं, साक्षात् प्रजापिता ब्रह्मा जो सृष्टि के आदि पिता हैं, ज्ञान के आदि भंडार हैं उन्होंने भी अपना हाथ मेरे ऊपर रखा है, आशीर्वाद दिया है। यह मेरा परम सौभाग्य है। उस दिन से मैंने सोचा कि बाबा की कोई भी आज्ञा हो उसको टालना नहीं चाहिए। बाबा की आज्ञा का पालन हम करते चलेंगे तो बाबा हमें भंडारों से भरपूर करेंगे।

ज्ञान की देवी माँ सरस्वती

एक दिन बाबा और मम्मा दोनों बैठे थे। मम्मा की मुरली समाप्त हुई थी, बाबा ने मुरली शुरू की थी। बाबा ने कहा कि हम सब पहले उल्लू थे, उल्टे लटके पड़े थे। हमें कुछ भी पता नहीं था इस संसार में। फिर बाबा ने कहा कि यह अन्दर से निकलना चाहिए कि हम सब उल्लू थे। जब तक ऐसा नहीं समझेंगे कि हम सब उल्लू थे और अल्लाह ने आकर हमें सुल्टा बना दिया तो कैसे पता पड़ेगा कि बाबा के प्रति आपका प्यार है। फिर बाबा ने कहा, मम्मा बैठी हुई है, मम्मा बोलती ही नहीं है। मम्मा, तुम क्यों नहीं कहती कि हम उल्लू थे? मम्मा ने सिर हिलाकर इशारे से ही 'हाँ बाबा' कहा। बाबा ने कहा, देखो अभी भी मम्मा कहती नहीं है, सिर्फ सिर हिलाती है। फिर मम्मा ने कहा, हाँ बाबा, हम पहले उल्लू थे। मैं इस बात को इसीलिए बता रहा हूँ कि मम्मा की यह विशेषता थी कि बाबा ने जो कहा, मम्मा ने सौ प्रतिशत निश्चय करके मान लिया और चलकर दिखाया। वे कभी नहीं भूली कि यह कौन कह रहा है! इसीलिए ही वे ज्ञान की देवी, माँ सरस्वती कहलायी। ज्ञान का पूरा मर्म, ज्ञान की सारी गंभीरता उनमें थी। उनका जीवन ही ज्ञानयुक्त, ज्ञानस्वरूप, ज्ञानपूर्ण था।

सम्पादकीय . . .

कन्याओं द्वारा क्रान्ति

संसार के इतिहास में आज तक ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं हुआ जिसने कि समाजोत्थान में, जनता की आध्यात्मिक उन्नति में अथवा एक नई क्रान्ति में कन्याओं को विषेश रूप से सहयोगी बनाया हो। भारतवर्ष की परम्परा तो कुछ ऐसी रही है कि किसी के यहाँ कन्या जन्म लेती है तो माता-पिता इतने प्रसन्न नहीं होते जितना कि वे पुत्र पैदा होने पर खुश होते हैं। कन्या के जन्म लेने पर प्राय: लोग सोचते हैं कि उनके सिर पर लाखों रुपयों का बोझ पड़ गया है जोकि कन्या के दहेज इत्यादि पर विवाह के समय खर्च करना पड़ेगा। यहाँ संन्यासी या महात्मा भी सदा 'पुत्रवान भव' ही का वरदान देते हैं; 'पुत्रीवान भव' ऐसा तो कोई भी नहीं कहता। जब कन्या बड़ी होती है तब भी माता-पिता को उसके कुमारीत्व, वर्चस्व अथवा चरित्र की रक्षा और उसके लिये श्रेष्ठ वर ढूँढ़ने की चिन्ता लगी रहती है परन्तु पिताश्री संसार के एकमात्र ऐसे पिता हैं जिन्होंने हजारों कन्याओं को अपनी कन्यायें बनाया और उन्हें ऐसा चरित्रवान बना दिया कि उनके चरित्र की रक्षा की चिन्ता तो एक ओर रही, वे (कन्याएँ) आज पूरी तरह नर-नारियों के चरित्रोत्थान में सफलतापूर्वक लगी हुई हैं। जहाँ एक कन्या के लिए श्रेष्ठ वर ढूँढ़ने की चिन्ता उसके माता-पिता तथा सम्बन्धियों को सुख की नींद नहीं लेने देती, वहाँ पिताश्री ने, परमात्मा रूपी वर के साथ, शत-शत कन्याओं की लगन जोड़कर, उनको सही अर्थों में सौभाग्यशाली बना दिया है।

कन्याओं को सर्वोपरि स्थान

बाबा ने सतयुगी सृष्टि की संस्थापना के महान कार्य में कन्याओं को सर्वोपरि स्थान दिया, यहाँ तक कि इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का नाम भी 'ब्रह्माकुमारी' शब्द को लिये हुए है। यों बाबा ने माताओं को भी बहुत मान दिया और इस कार्य में उनका भी अपने तौर पर महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में प्रवेश प्राप्त करने पर तो उन्होंने भी कुमारी-व्रत को ले लिया और इसके फलस्वरूप उन्हें भी 'ब्रह्माकुमारी' की उपाधि मिली यद्यपि वे अविवाहिता कन्या की तुलना में 'अधरकन्या' कहलायीं।

'डबल' महात्मा

प्रश्न उठता है कि बाबा ने कन्याओं को इतना महत्त्व क्यों दिया? आप देखेंगे कि यों तो भारत की परम्परा में कन्या को सम्मान दिया ही जाता है। यहाँ कन्या से भूल हो जाने पर भी उस पर हाथ उठाना वर्जित माना जाता रहा है। यहाँ कन्याओं को 'शक्ति-रूपा' माना जाता है और वयस्क तथा वयोवृद्ध लोग भी कन्या को 'जगतमाता' रूप मानकर वर्ष में एक विशेष दिन उसके चरण-स्पर्श कर स्वयं को धन्य मानते हैं। इसका मूल कारण कन्या की पवित्रता है। बालकों की अपेक्षा बालिकाओं से दृष्टि-वृत्ति की शुद्धि की अधिक आशा की जाती है क्योंकि उनमें संकोच, लज्जा इत्यादि अधिक होते हैं। अत: ब्रह्मचर्य, जोकि योग की नींव है, में कन्याओं को आशानुकूल सफलता प्राप्त होती है। इसलिए बाबा ने कन्याओं, जिन्हें कि पहले ही महान माना जाता है, को ईश्वरीय ज्ञान, गुण एवं योग रूपी शक्ति देकर सचमुच 'शक्तिरूपा' बना दिया। इस प्रकार, 'डबल' महात्मा बनने से उनका आत्म-बल, उनकी कल्याणकारी शक्ति तथा उनकी तपस्चर्या का प्रभाव लोगों पर पड़ना स्वाभाविक ही है।

उठाव, अलगाव, अभाव

होश संभालने पर कन्या का मन अपने घर से उठा-उठा-सा रहता है क्योंकि वह जानती है कि एक दिन तो उसे यहाँ से जाना ही है, उसे अधिक समय तक या जीवन-भर के लिये तो इस घर में रहना नहीं है। घर में रहते हुए भी वह समझती है कि मेरा तो यहाँ कुछ भी नहीं, मेरे साथ तो मेरा नसीब (भाग्य) चलेगा। इसकी तुलना में कुमार समझते हैं कि घर में जो-कुछ भी है, यह एक दिन

उन्हीं का हो जाने वाला है। उनमें स्वामीपन का भान होता है; शारीरिक बल का अभिमान तथा धनोपार्जन का जो नशा होता है, वह अलग। कन्या बेचारी गरीब है, एक दिन घर छोड़कर डोली में चली जाने वाली है, इन सम्बन्धियों से बिछुड़ कर उसे न जाने कौन-से सम्बन्धी मिलेंगे? इस प्रकार, मन का उठाव, सम्बन्धों में होते हुए भी मूल रूप में उनसे थोड़ा-बहुत अलगाव, सब-कुछ घर में होते हुए भी उसमें अपने-पन की वृत्ति का अभाव, यही तो सही संन्यास के मूल तत्व हैं और ईश्वर-प्रेम अथवा योग की नींव हैं। इन्हीं का मार्गान्तरीकरण करके, बाबा ने सही अर्थ में कन्याओं को योगिनी, तपस्विनी और त्याग-वृत्ति सम्पन्न बनाया।

कन्याओं को बनाया विश्ववंद्य

कन्याओं में जो स्वाभाविक तौर पर संकोच, लज्जा, नम्रता इत्यादि गुण होते हैं, उनका प्रयोग करके ब्रह्मा बाबा ने उन्हें प्रभु-प्रेम में जोड़ दिया और सांसारिक बुराइयों से मोड़ दिया। जिस कुमारी-वर्ग के आगे पहले केवल रस्म के तौर पर लोग झुकते हैं, उन्हें बाबा ने सचमुच विश्व-वंद्य बना दिया। उन्हें इतना महान बना दिया कि जिस कन्या-वर्ग को कई वेदवादी लोग 'ओम' शब्द के उच्चारण से तथा वेदों के अध्ययन से वन्चित रखने की चेष्टा करते रहे हैं, उस कन्या-वर्ग एवं माता जाति को बाबा ने गुरु पदवी के योग्य बना दिया, यद्यपि हम एक परमात्मा के सिवा यहाँ किसी अन्य को 'गुरु' मानते नहीं हैं। आज एक ओर अहंकार एवं क्रोध से भरे हुए उत्तेजनाशील वयस्क विद्वानों तथा दूसरी ओर सरलता, नम्रता, शीतलता, स्नेह और मुस्कान से युक्त इन ज्ञानमयी कन्याओं का जो स्पष्ट अन्तर है, वह देखकर कोई भी मनुष्य पिताश्री की कमाल माने बिना नहीं रह सकता।

कन्या-दान

यहाँ कन्याओं का जीवन इतना उच्च बनते देख कर, उन्हें जन-जन के आध्यात्मिक कल्याण के कार्य में जुटा देख कर ही तो अनेकानेक कुटुम्बियों ने अपनी कन्याओं को इस देश-सेवा, नहीं-नहीं, विश्व-सेवा के कार्य के लिए सहर्ष प्रभु-समर्पित किया। यों सांसारिक रीति तो यह है कि माता-पिता अथवा अभिभावक, ब्राह्मण एवं मित्र-सम्बन्धियों के सम्मुख 'वर' को ही कन्या-दान करते हैं। परन्तु विश्व के इतिहास में यह एक विचित्र वार्ता देखिए कि माता-पिता अपनी कन्याओं को इस उत्तम सेवा के लिये समर्पित करते हैं। कोई भी समझदार माता-पिता अपनी कन्या अथवा अपने पुत्र को किसी ऐसे घर में नहीं भेजना चाहते जहाँ उनका जीवन सुखी न हो या जहाँ चारित्रिक वातावरण न हो। स्पष्ट है कि सज्जन परिवारों एवं उच्च घरानों की कन्याओं को उनके माता-पिता ने सोच-समझ कर ही प्रभु को सौंपा होगा कि यहाँ इनकी ईश्वरानुभूति की जन्म-जन्मान्तर की मनोकामना पूर्ण होगी और इनका आध्यात्मिक विकास पूर्णता को प्राप्त होगा। एक छोटे-से परिवार की चार-दीवारी में बन्द होकर अनमोल जीवन को विषयों में बिताने की बजाय यहाँ यह अपने जीवन को, हजारों नर-नारियों को ईश्वरीय आनन्द का प्याला पिलाने की सेवा में सफल करेगी। वास्तव में माता-पिता अथवा अभिभावकों ने कन्या 'समर्पित' करते समय ऐसा लिख कर दिया भी है।

पितृवत स्नेह

लौकिक दुनिया में, कोई भी पिता जब दूसरे किसी के बच्चे या बच्ची को अपनाते हैं (एडाप्ट करते हैं) तो यह बात तो वे जानते ही हैं कि इसको उत्तराधिकार भी देना है। वे उस बच्चे को केवल प्यार और दुलार ही नहीं देते और उसके लालन-पालन अथवा उसकी शिक्षा-रक्षा पर ही खर्च नहीं करते बल्कि बाद में उसे कुछ देते भी हैं। परन्तु, विरले ही इतना प्यार, धर्म के बच्चे को दे पाते हैं

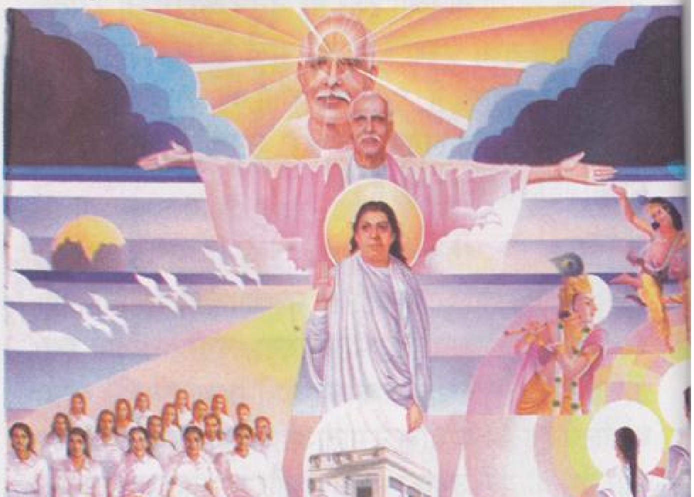

कि बच्चा अपने वास्तविक माता-पिता की अपेक्षा, अपनाने वाले माता-पिता से अधिक घुल-मिल जाये। फिर उस बच्चे को चाहे कितनी भी लौकिक सम्पत्ति उत्तराधिकार में मिलती हो, वह होती तो नश्वर एवं प्रकृतिजन्य सुख देने वाली ही है। अत: यह कैसी अद्‌भुत बात है कि पिताश्री ने यहाँ हजारों कन्याओं-माताओं को अथवा कुमारों को ऐसा स्मरणीय एवं अथाह प्यार दिया कि उनके लिए दैहिक स्मृतियाँ ही फीकी पड़ गयीं और वे इतने अतुल ज्ञान-धन, गुण-श्रृंगार, योग-सौन्दर्य, चारित्रिक पूँजी के मालिक बने कि सारे कलियुगी संसार का राज्य भी उसके सामने हेय है। है कोई ऐसा व्यक्ति जिसके बारे में सभी यही सोचें कि जितना प्यार यह हमें देता है उतना यह अन्य किसी को नहीं देता?

एक बड़ी विडम्बना

परन्तु कितने अचम्भे की बात है कि शिवबाबा ने नई सृष्टि की रचना के लिये यह जो अत्यन्त महान कार्य किया, उसकी ओर न देखते हुए, कठोर हृदय वाले कुछेक ऐसे हठी लोग हैं, जो कहते हैं कि बाबा ने यह ठीक नहीं किया। वे कहते हैं कि ''ज्ञान-ध्यान की बातें तो वयस्क एवं वयोवृद्ध लोगों के लिये होती हैं, कन्याओं और कुमारों का जीवन तो खाने-कमाने और गृहस्थ भोगने के लिए होता है।'' क्या अजब कुदरत है। जरा सोचिये तो सही; काम, क्रोध, लोभ आदि से परिपूर्ण, आधुनिक वातावरण में फँसने के बाद युवक-युवतियों में दूसरों के चारित्रिक उत्थान के लिए आत्मिक शक्ति एवं शारीरिक क्षमता कहाँ रह जायेगी?

यदि कोई व्यक्ति स्वयं काम, क्रोध, लोभ, मोह को अच्छी तरह भोग कर दूसरों को उपदेश करे तो लोग कहते हैं, ''वाह साहब वाह! आपने गृहस्थ को खूब भोग लिया और संसार-वाटिका की अच्छी तरह सैर कर ली, खूब फैशन इत्यादि कर लिया और आज जब आप बूढ़े हो गए हैं तो हमें रोकते हैं? जब आप हमारी आयु के थे यदि तब आप इन विकारों का त्याग करते तो आपके कथन का हम पर कुछ प्रभाव भी पड़ता।''

संसार कल्याण का सशक्त साधन

किसी विकारी वयस्क को जब कोई कन्या कहती है कि ''आप मेरे पिता-तुल्य हैं। आप अपने गृहस्थ में वासना-भोग करके अभी भी तृप्त नहीं हुए और मैं आपकी नन्हीं-सी पुत्री हूँ। मैंने प्रभु-प्रीति में इस काम-विकार का त्याग किया है, क्या आप इस अन्तिम जन्म के शेष थोड़े रहे समय में भी, आत्मा को नरक में धकेलने वाले इस काम विकार को नहीं त्याग सकते'' तो वह उस कन्या की इस तोतली-सी बात को सुनकर लज्जित और अवाक् रह जाता है। नहीं, नहीं, तुरन्त प्रायश्चित्त-वृत्ति से कह उठता है कि ''मैं आज से इस महाविकार को छोड़ रहा हूँ।'' यदि अन्य किसी व्यक्ति को माता समझाती है, ''देखो, हमने तो विकारों की यह दुनिया देखी है, हाय-हाय यह रौरव नरक है, अब हमें अथाह खुशी है कि हमें प्रभु ने इससे निकाला है। आपकी शुभ-चिन्ता में हम आपकी स्नेही बहन के रूप में, अपने अनुभव के आधार पर कहती हैं कि विकार दुख का घर है, अब इस विष को छोड़ शेष जीवन में अमृत पियो।'' तब वह कह उठता है कि ''धन्य हो बहन, आपने मुझे पवित्रता का मार्ग दिखा दिया।'' अत: देखिये तो बाबा ने युवा पीढ़ी एवं कन्याओं-माताओं के जीवन को अध्यात्म से संजोकर कैसे उन द्वारा संसार के कल्याण के लिये एक अत्यन्त उत्तम एवं सशक्त साधन तैयार किया है। ■■■

पत्र सम्पादक के नाम

हर माह की ज्ञानामृत में जो लेख चयनित होते हैं वे वास्तव में जीवन परिवर्तन करने वाले होते हैं, मनुष्यात्मा को झकझोर देते हैं। अक्टूबर, 2018 की ज्ञानामृत को कोर्ट के चेंबर में बैठकर पढ़ा जिसमें ''प्रतिशोध नहीं परोपकार'', ''एक पत्र वरिष्ठ नागरिकों के नाम'', ''घृणा से परहेज'', ''मांसाहार करना महापाप'' आदि लेख बहुत ही चिंतन-मंथन योग्य हैं और इनकी व्याख्या बहुत ही सहज, सरल रूप में की गई है। इन्हें पढ़कर पाठकों का कल्याण निश्चित है। आप ज्ञानामृत द्वारा अपनी सेवाओं से विश्व कल्याणकारी वीणा लिए हुए हैं।

ब्रह्माकुमार रतन, सिकंदराराऊ, हाथरस (उत्तर-प्रदेश)

अक्टूबर, 2018 अंक के लेखों को पढ़कर अति प्रसन्नता हुई। मन गद्‌गद्‌ हो गया। कुछ लेखों को तो बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। कुछ लेखों को जीवन का अंग बनाते हुए गीता पाठशाला में सुना-सुना करके प्रेरणा भी देता हूँ। 'एक सेकेण्ड' लेख में, एक-एक सेकेण्ड का महत्व समझाया गया है। 'नास्तिक से स्वाध्याय तक, स्वाध्याय से स्वपरिवर्तन तक' लेख में जीवन में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन को दर्शाया गया है। पत्रिका के समस्त लेख आदर्शों को दर्शाने वाले एवं जीवन में उपयोगी हैं। 'एक पत्र वरिष्ठ नागरिकों के नाम', 'घृणा से परहेज' एवं 'जिस्मानी सेना से रूहानी सेना तक का सफर' लेख भी अच्छे हैं। ऐसे सुन्दर-सुन्दर लेखों को पढ़-पढ़ कर जीवन को और भी सुन्दर एवं आत्मा को चमकाने का पुरुषार्थ किया जा रहा है। सभी लेखकों को विशेष धन्यवाद।

ब्र.कु.सुदेश भाई, भरतपुर (राजस्थान)

नवम्बर अंक के संपादकीय लेख में वीरता के गुण को बहुत ही श्रेष्ठ तरीके से स्पष्ट किया गया है। वीरता कहाँ काम आती है, कहाँ नहीं आती है। वीरता का गुण देवताओं में नहीं होता है। वीरता नामक गुण की नई व्याख्या देकर एक सद्‌गुण के रूप में हमारे सामने रखा जिससे हम आध्यात्मिकता के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच सकते हैं।

ब्र.कु.रमेश, अजमेर (राजस्थान)

नवम्बर, 2018 का अंक काफी हद तक भावनात्मक रहा है। वर्णमाला में सिखलाये जाने वाले, 'क' वर्ग के वर्णों के विश्लेषण ने सचमुच मन को छुआ। क – कर्म करने के नियम; ख – खाने के नियम; ग – प्रभु के गुण गाएँ; घ – घमंड से बचें...। लेखिका बहन की ज्ञानानुभव की गहन अभिव्यक्ति ने हृदय को प्रफुल्लित कर दिया। 'बुरा मत मानो', 'आपसी संबंधों में समरसता' लेख भी बहुत ही अच्छे हैं। 'मेरे साथ क्या हो रहा है' इसे छोड़ 'मुझे क्या करना है' इस पर ध्यान दें, लेख ने बढ़िया मार्गदर्शन किया।

बाबू भाई, चिटगुप्पा, बीदर (कर्नाटक)

स्थानीय केन्द्र के सहयोग से आपकी पत्रिका करीब एक वर्ष से नियमित पढ़ रहा हूँ। सात्विक, सदुपयोगी, ज्ञानवर्धक पत्रिका के लिए प्रणाम, साधुवाद, नमन। इस पत्रिका के जानकारीपूर्ण लेखों से मेरा तनाव कम हुआ है; मानसिक शान्ति बढ़ी है; क्रोध, लालच, आलस्य कम हुआ है; तामसी प्रवृत्ति कम हुई है एवं सात्विकता बढ़ी है। घोर अंधकार की अमावस्या में इस पत्रिका ने मेरे जीवन में दीपक प्रज्वलित किया है। मुझे ऊर्जा, हिम्मत, साहस, शक्ति प्रदान करने हेतु आप सभी का आभार, कृतज्ञता, धन्यवाद, शुक्रिया। ज्ञानामृत पत्रिका से ज्ञान का अमृत पीकर मेरे मन में अज्ञान के विष में कमी आई है। शान्तिवन में सभी को प्रणाम। एक बार आकर मिलूँगा।

दिलीप भाटिया, रावतभाटा (राजस्थान)

बाबा का व्यक्तित्व

दिव्य, भव्य और शालीनतापूर्ण था

■■■ ब्रह्माकुमारी मोहिनी बहन, न्यूयार्क (अमेरिका)

मेरा लौकिक जन्म कराची में हुआ था। जब भारत का विभाजन हुआ तब मैं चार वर्ष की थी। विभाजन के कारण हम सब परिवार वाले कराची से दिल्ली आये। मेरी लौकिक पढ़ाई दिल्ली में ही हुई। हरेक परिवार में कुछ मान्यतायें होती हैं। हमारे परिवार में भी एक मान्यता थी कि घर की लड़कियों को अच्छी तरह से शिक्षा देनी चाहिए, पढ़ाई पढ़ानी चाहिए। इसका एक कारण भी था। हमारे खानदान में एक बहन थी, उसका विवाह एक धनाढ्य परिवार में हुआ। उनका व्यापार था लेकिन एक बार व्यापार में कुछ उतार-चढ़ाव आने के कारण उसका जीवन कठिनाई में आ गया। तब से घर में दादा, नाना आदि जो बुजुर्ग थे, उनको यह विचार आया कि हम अपनी लड़कियों को इतना अवश्य पढ़ायें कि आगे के जीवन में कुछ ऊपर-नीचे हो, तो भी वे स्वतंत्र रूप से जीवनयापन कर सकें अर्थात् आर्थिक रूप से अपने पाँवों पर खड़ी हो सकें।

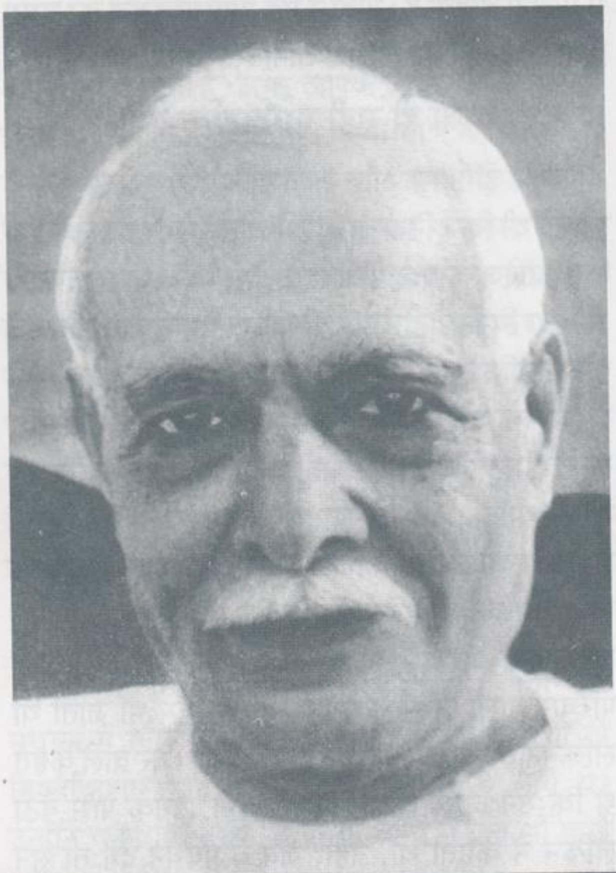

ध्यान था नैतिक मूल्यों पर

मैं स्कूल में तो पढ़ती थी लेकिन मुझे अन्दर से यह भावना रहती थी कि मेरा साधरण जीवन नहीं होना चाहिए। परिवार में जो धार्मिक क्रिया-विधियाँ चलती थीं जैसे प्रार्थना करना, पूजा करना, गुरुओं के आश्रमों पर जाना आदि तो मैं सबके साथ करती थी लेकिन व्यक्तिगत रूप से धर्म के प्रति या भक्ति के प्रति खास रुचि नहीं थी। हाँ, नैतिक मूल्यों पर बहुत ध्यान था। सच बोलना, ईमानदार बनकर रहना – यह अच्छा लगता था लेकिन चारों तरफ का वातावरण देखती थी तो मुझे किधर से भी मूल्यों के लिए प्रोत्साहन नहीं मिलता था। इसलिए मन में यह भाव उठता था कि हमें ऐसी शक्ति मिले या ऐसा आध्यात्मिक ज्ञान मिले जिससे हम नैतिक मूल्यों के साथ जीवन व्यतीत कर सकें। विद्यार्थी जीवन से ही मैं स्कूल की पुस्तकों के अलावा स्वामी विवेकानंद जी और स्वामी रामतीर्थ जी की किताबें भी पढ़ती थी।

हमारे परिवार का सम्बन्ध प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से इसके स्थापना काल से ही है। यह संस्था ओम मंडली के नाम से 1936 में सिन्ध में आरम्भ हुई, तब लगभग सब सिन्धी परिवार वहाँ गये थे। हमारे पिता जी भी, सब परिवार वालों के साथ ओम

मंडली में गये थे। जब अन्य परिवारों की बहनें ईश्वरीय सेवा में समर्पित होने लगीं तो डर के मारे हमारे परिवार वालों का भी जाना बन्द करवा दिया गया। फिर भी मेरी मौसी और मौसाजी, यज्ञ में उस समय ही समर्पित हो गये थे। मौसी को गोपी दादी कहते थे और उनके युगल को स्वामी जी कहते थे। फिर चौदह साल तक ओम मंडली से हमारे परिवार का कोई सम्बन्ध नहीं रहा।

आकर्षित करती थी अलौकिकता

सन् 1950 में जब ओम मंडली आबू आयी, तो सन् 1951 में कुछ ब्रह्माकुमारी बहनें दिल्ली में हमारे घर आयीं। दिल्ली में ईश्वरीय सेवा करने के लिए इन्हें कुछ सहयोग चाहिए था। उस समय मैं लगभग ग्यारह वर्ष की थी। मैंने पहली बार ब्रह्माकुमारी बहनों को देखा। हम बच्चों को कहा गया था कि आप में से किसी को भी ब्रह्माकुमारियों से नहीं मिलना है। बहनें घर पर आती-जाती थीं। घर के बड़े उनसे मिलते थे, बाकी छोटों को उनसे मिलने नहीं दिया जाता था। फिर भी मेरे मन में उत्सुकता रहती थी कि इन बहनों से मिलना चाहिए और इनसे बातें करनी चाहिएँ। घर आने वालियों में मनोहर दादी, गंगे दादी, बड़ी दीदी, दादी गुलजार आदि सब थीं। उनकी वेषभूषा तो बेशक साधारण थी लेकिन जब उनको देखती थी तो लगता था कि ये अन्य लोगों से भिन्न हैं, उनकी अलौकिकता मुझे आकर्षित करती थी। उनका हर्षित चेहरा, उनकी सादगी, सफाई आदि बातें मंत्रमुग्ध करती थीं। उस समय मुझे बस इतना ही पता था कि एक बाबा हैं, जिनको ब्रह्मा बाबा कहते हैं।

साकार बाबा का दिल्ली आगमन

सन् 1956 में मेरी कॉलेज की शिक्षा पूरी हुई। मुझे विश्वविद्यालय में दाखिला लेना था। इसी बीच थोड़ी छुट्टियाँ थीं। उस समय मेरे मन में आया कि मुझे आध्यात्मिक शिक्षा लेनी चाहिए। मुझे पता चला कि घर के नजदीक ही ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शाखा खुल गई है। एक दिन मैं वहाँ गयी। बहनों ने कहा कि आप रोज आओ, अपनी माता जी को भी लेकर आओ, अपने सम्बन्धियों को भी ले आओ। मैं तो वैसे ही जाती थी, कोई खास रुचि नहीं थी। फिर मैंने बाबा से सम्पर्क स्थापित करना शुरू कर दिया। एक बार मैंने बहनों से पूछा कि क्या हम बाबा को पत्र लिख सकते हैं? बहनों ने कहा कि हाँ, लिख सकते हैं और बाबा उसका उत्तर भी देते हैं। मेरे लौकिक पिता जी शरीर छोड़ चुके थे तो मैंने बाबा को पत्र में लिखा कि मुझे आपकी बच्ची बनना है तो क्या-क्या शर्तें हैं? उत्तर में बाबा ने बहुत अच्छा पत्र लिखा कि अगर रोज प्रात: क्लास में आओगी, ज्ञान सुनोगी तो आपका बाबा से सम्पर्क बनेगा। मैंने सोचा कि थोड़े समय के लिए प्रात: क्लास में जाकर थोड़ा सुनूँ, थोड़ा सीखूँ। उन दिनों कोई साप्ताहिक कोर्स आदि नहीं होता था। सेवाकेन्द्र पर मुझे साधारण तरीके से ज्ञान समझा दिया गया। सेवाकेन्द्र पर जाते एक महीना ही हुआ था कि साकार बाबा का दिल्ली में आना हुआ। पत्रों से मेरा सम्पर्क बाबा से था ही। मैंने बहनों से कहा कि मैं बाबा से मिलना चाहती हूँ। बाबा ने मुझे शाम पाँच बजे का समय दिया। तब तक मैंने कॉलेज जाना शुरू कर दिया था।

बाबा ही सही मार्गदर्शक लगे

मैंने इतिहास और राज्यशास्त्र विषय लिये थे। मैं चाहती थी कि दुनिया के बारे में थोड़ा-सा पता चले। उस दिन कॉलेज के बाद मैं बाबा के पास गयी। बाबा के साथ 15-20 मिनट बैठी रही। बाबा ने बहुत व्यवहारिक बातें कीं जैसे कि आप क्या पढ़ती हैं, इतिहास में क्या सीखती हैं, आपके क्या-क्या शौक हैं आदि। बाबा ने मेरे साथ बहुत प्यार से बातें कीं। बाबा के व्यक्तित्व को देखकर लगता था कि वे अन्दर-बाहर एकदम स्पष्ट और स्वच्छ हैं। बाबा का व्यक्तित्व दिव्य और भव्य तो था ही लेकिन बाबा का व्यवहार जैसे कि बच्चों को टोली खिलाना, उनसे बातें करना – ये भी बहुत रॉयल रहे। लौकिक परिवार वालों के साथ मैं अन्य आश्रमों में भी जाती थी लेकिन गुरु आदि से दूर-दूर ही रहती थी। घर वाले कहते थे कि उनके पैर छूओ, प्रणाम करो, उनके पास बैठो लेकिन मैं कहती थी, नहीं, जब वे प्रवचन देंगे तो सुन

लूँगी। उनके जनदीक जाने की इच्छा नहीं होती थी। जब मैंने ब्रह्मा बाबा को देखा तो महसूस होने लगा कि यही सही मार्गदर्शक हैं। ये जो शिक्षा दे रहे हैं, मुझे इसी तरह की शिक्षा चाहिए जिससे मैं अपना जीवन बना सकूँ।

समय लगने लगा ईश्वरीय सेवा में

बाबा ने मुझे कहा, बच्ची, तुम पढ़ाई नहीं छोड़ना। बाबा को ऐसी पढ़ी-लिखी बच्चियाँ चाहिएँ जो विदेशों में सेवा करें। मेरी पढ़ाई भी अंग्रेजी में थी। घर वाले भी मुझे पढ़ाना चाहते थे, मैं भी पढ़ना चाहती थी और बाबा ने भी कहा, तो मैं खुशी-खुशी से पढ़ाई करने लगी। बीच-बीच में सेवा भी करती थी। जहाँ भी प्रोग्राम होते थे, नये सेवाकेन्द्र खुलते थे तो वहाँ भाषण करने जाती थी। धीरे-धीरे मेरा ज्यादा समय ईश्वरीय सेवा में लगने लगा। परिवार वाले भी समझने लगे कि इसका जीवन ईश्वर-अर्थ ही रहेगा। मैंने बी.ए.पूरा किया, उसके बाद पत्रकारिता (Journalism) का कोर्स किया।

घर वालों ने कहा कि जीवन में हरेक का अपना-अपना लक्ष्य रहता है, अगर आपके जीवन का लक्ष्य यही है तो हम आपको रोकेंगे नहीं। एक साल मैंने दिल्ली में जर्नालिस्ट के रूप में नौकरी भी की। उनको विश्वास हो गया कि यह अपने पैरों पर खड़ी होकर भी अपना जीवन जी सकती है। फिर वे ज्ञान में आगे बढ़ने के लिए मुझे प्रोत्साहित करने लगे। सन् 1962 में पढ़ाई पूरी करके मैंने सेवाकेन्द्र पर रहना शुरू कर दिया। बाबा मुझे बड़ी-बड़ी प्लॉन्स (योजनायें) देते थे कि बड़े-बड़े पर्वतीय स्थलों पर जाकर प्रदर्शनी करो। दिल्ली में होने के कारण यज्ञ के लिए किसी मंत्री के पास जाना हो, किसी से कार्य कराना हो तो बाबा मुझे कहते थे।

विघ्न आए तो घबराना नहीं

मैं सन् 1958 में पहली बार मधुबन आयी थी। मधुबन में कुछ दिन रहकर मैं वापिस जा रही थी तो विश्वकिशोर भाई स्टेशन तक मुझे छोड़ने आये थे। उन्होंने कहा कि देखो, बाबा के कार्य में जब भी कोई विघ्न आये ना, घबराना नहीं। खुश होना चाहिए कि बाबा अब मुझे मदद करेगा। जब कोई कार्य सरल होता है, तब हम बाबा को याद नहीं करते। बाबा को याद नहीं करते तो बाबा मदद कैसे करेंगे? इसलिए जब विघ्न तथा परिस्थितियाँ आती हैं तो कभी घबराना नहीं। एक तरफ बाबा ने यह वरदान दिया था कि सफलता आपकी रहेगी और दूसरी तरफ भाऊ ने यह युक्ति बता दी जो मुझे बहुत अच्छी लगी। इस ज्ञानमार्ग में मुझे बाबा से योग लगाना (मेडिटेशन करना) बहुत अच्छा लगता था और ज्ञान में चलने के 3-4 महीने में ही साक्षात्कार होने लगे। ट्रान्स का पार्ट भी मेरा उसी समय शुरू हो गया। एक तरफ पढ़ाई थी, दूसरी तरफ सेवा थी और तीसरी तरफ यह ट्रान्स का पार्ट था।

आत्मिक अभ्यास जीवन का फाउन्डेशन

बाबा मुझे कई तरह की सेवाएँ देते थे। छोटी उम्र की कुमारी होने के कारण बड़ी दीदी मुझे कहती थीं कि हमेशा अपने को 'जगत् माता' समझो तो किसी की भी आपके प्रति अन्य दृष्टि नहीं जायेगी और आप सुरक्षित रहेंगी। ऐसे तो मेरे सामने कोई समस्या नहीं आयी लेकिन कभी-कभी अकेले ही जाना पड़ता था, रात को देर से सेवाकेन्द्र आना पड़ता था या अचानक मधुबन से बाबा का बुलावा आता था तो तुरन्त बिना रिजर्वेशन जाना पड़ता था। उस समय हमेशा मेरे में यह भावना रहती थी कि मैं 'जगत् अम्बा' हूँ। एक बार मधुबन में जर्नाजिस्ट आने वाले थे तो बाबा ने फोन किया कि बच्ची, मधुबन आ जाओ। मैंने स्टेशन पर आकर रिजर्वेशन करा ली। कम्पार्टमेंट में छह लोगों के लिए बर्थ होती है, उनमें पाँच भाई थे जो अन्य धर्म के थे और एक ही सीट खाली थी जो मुझे मिली थी। मैं जाकर वहाँ बैठी। जब ट्रेन चलने लगी तो उनको ख्याल चलने लगा कि यह अकेली बहन है। मैंने यह सोचा कि अभी तक हमने जो सीखा है, उसका प्रयोग और परीक्षण करने का यह समय है। मैं खिड़की के पास बैठकर आत्मिक स्थिति का अभ्यास करने लगी कि मैं एक शुद्ध आत्मा हूँ, ये भी आत्मा हैं,

सभी परमात्मा की सन्तान हैं। थोड़ी देर के बाद जब टी.टी.ई.टिकट देखने के लिए आया तो उन भाइयों ने उससे कहा कि इस बहन को दूसरा स्थान दे दो। उनके पास जो भोजन था, वह माँसाहारी था, उन्होंने दूसरी जगह जाकर वह भोजन खाया। तब मैंने महसूस किया कि कोई भी ऐसा वातावरण हो या ऐसा लगे कि कहीं विरोध हो सकता है, तकलीफ हो सकती है, तब अंदर में एकदम आत्मिक स्थिति का अभ्यास करें, बाबा को याद करें तो वहाँ के वायब्रेशन में परिवर्तन आ जाता है। आज तक भी मैं इसका प्रयोग करती हूँ। बाबा कहते हैं कि सदा शुभभावना और शुभकामना रखो। शुभभावना और शुभकामना, बिना आत्मिक अभ्यास के रख नहीं सकते। आत्मिक अभ्यास को मैंने अपने जीवन का फाउण्डेशन बनाया है।

इसके बाद बाबा ने मुझे एक बड़े सेवाकेन्द्र के निमित्त बनाया जो देहली के साउथ एक्सटेन्शन में था। उस समय कई तरह की परिस्थितियाँ आती थीं, कई विरोधी भाव वाले, विकारी भाव वाले आते थे लेकिन जब वे सेवाकेन्द्र के अन्दर आते थे, उनका भाव ही बदल जाता था। एक बार एक व्यक्ति ने खुद ही अपना अनुभव सुनाया कि मैं इस भाव से आया था लेकिन आपके सेवाकेन्द्र के वातावरण ने मेरा मन ही बदल दिया। सेवा के लिए बाबा मुझे भारत के अनेक स्थानों पर भेजते थे।

हर जगह मिला लोगों का सहयोग

बाद में बाबा ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। उन दिनों विदेशों में सेवाकेन्द्र नहीं थे। मुझे होटलों में रहना पड़ता था। शुरू से आत्मिक भाव में रहने का, स्वमान में रहने का बाबा से वरदान तो मिला था लेकिन होटलों का वातावरण तो दूषित होता है। ऐसे वातावरण में बहुत योगयुक्त होकर रहना पड़ता था। एक बार मुझे सिंगापुर जाना पड़ा। वहाँ पर एक सम्मेलन हो रहा था, उसमें स्वामी सच्चिदानन्द जी भी आये हुए थे। वे बाबा को जानते थे। सिंगापुर में स्वामी जी के बहुत शिष्य थे तो उनके पास बहुत फल आते थे। रात को रोज वे मेरे लिए काफी सारे फल, सब्जियाँ भेजते थे। वे अपने अनुयायियों को कहते थे कि तुम जाओ ब्रह्माकुमारियों के पास, एक दिन में ही तुमको ज्योति का दर्शन करा देंगी। कहने का मतलब यह है कि मैं जहाँ भी गयी, वहाँ लोगों से सहयोग बहुत मिला।

बाबा की तरफ से मिला स्पष्ट इशारा

बाबा के अव्यक्त होने के बाद मेरे से कहा गया कि आप लन्दन जाओ। मेरा लन्दन जाना तो नहीं हुआ लेकिन जर्मनी गयी। एक बार अव्यक्त बापदादा ने मिलते समय, मेरे लिए बाबा ने ये महावाक्य उच्चारे कि "जब कोई निमंत्रण आता है, वे लोग अच्छे हैं या नहीं, यह जानने के लिए आपके मन में एक घंटी बजेगी जैसे कि बाबा की तरफ से टेलिफोन आ रहा है। जाने से पहले आप बाबा को मन में फोन करना, बाबा आपको मार्गदर्शन करते रहेंगे।" जब मैं न्यूयार्क में थी, तब एक निमंत्रण मिला। उन्होंने कहा कि बहुत बड़ा प्रोग्राम है, आप आइये। जिस प्रकार से वे कह रहे थे कि बहुत बड़ा प्रोग्राम है, मन में शंका हो रही थी कि वैसा है नहीं। जब उनके सिद्धांत और हमारे सिद्धांत नहीं मिलते हैं तो हम क्यों उसमें भाग लें? ऐसे हमेशा मैं सोचती थी। सबने कहा कि यह बहुत अच्छा मौका है, आपको जाना चाहिए। दोपहर का समय था। जाने की तैयारी करने से पहले मैं थोड़ा विश्राम कर रही थी। उस समय मुझे अन्दर से बहुत स्पष्ट रूप से ऐसा अनुभव हो रहा था कि बाबा कह रहे हैं कि बच्ची, सबको भेज दो सेवा करने के लिए लेकिन तुम मत जाओ। मैं सोचने लगी कि मैं सबको ऐसे कैसे कहूँ, मैं नहीं जाऊँगी? वे कहेंगे कि बहन जी ने प्रोग्राम बदल दिया। फिर मैंने ऐसे कहा कि आप सब थोड़ा पहले चले जाना। अगर आपको उचित लगे तो मुझे फोन कर देना, मैं आ जाऊँगी। जब वे लोग वहाँ गये तो वहाँ पैसे की बातें, राजनीति की बातें चल रही थीं। तो अपने भाई-बहनों ने फोन किया कि आप नहीं आइये, हम लोग यहाँ हैं, हम सन्देश दे देंगे। इस तरह से, बाबा की तरफ से इशारे मिलने के मुझे बहुत अनुभव हैं। ■■■

परमात्म पालना एवं छत्रछाया में 21 वर्ष

■■■ ब्रह्माकुमार अनिल कुमार, नवी मुंबई (ऐरोली, मुलुण्ड)

मेरा जन्म एक मध्यमवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ, जन्म से पहले माताजी को स्वप्न में एक बालक के शिवलिंग पर फूल चढ़ाते हुए के दर्शन हुए थे। बचपन लौकिक आनंद में बीता। जीवन में मोड़ उस समय आया जब एस.एस.सी. में परिणाम आशा अनुरूप न आने पर पिताजी द्वारा प्रताड़ना सुननी पड़ी। तब मन की शांति के लिए श्रीमद्भगवद्गीता ग्रन्थ का अध्ययन शुरू किया और पक्का कृष्णभक्त बन गया। धीरे-धीरे पुस्तकें व ग्रन्थ पढ़ने का संस्कार विस्तार को पाता गया और भागवत, ज्ञानेश्वरी, अमृतानुभव, रामायण, योगवशिष्ठ, चन्द्रकांता, तंत्र-मंत्र, परलोक विज्ञान इत्यादि विषयों पर अनेक पुस्तकें पढ़ डाली।

शांति की तलाश में गृहत्याग

बी.एस.सी.के आखिरी वर्ष में भी आशानुरूप परिणाम न मिलने के कारण पिताजी द्वारा रोज डाँट-फटकार सुननी पड़ रही थी। आखिर हीन भावना से ग्रसित होकर एक दिन माता-पिता के नाम पत्र लिखकर घर से चुपचाप निकल पड़ा और पहुँच गया पुट्टपर्थी (आँध्रप्रदेश)। पिताजी, श्री सत्य साईंबाबा को गुरु मानते थे। मैंने भी उन्हीं से आगे की जीवन-यात्रा के बारे में जानने का विचार बनाया। मेरे पास मात्र जाने के लिए टिकट के पैसे और थोड़े बहुत और पैसे थे। जब पूरे पैसे खत्म हो गये तब मुझे एहसास हुआ कि वास्तविक भूख क्या बला होती है। वहाँ पर श्री सत्यसाईं के लिए मैंने पत्र में अपने आने का उद्देश्य लिखा जिसमें साधना संबंधी जानकारी के लिए भी अनुरोध था। एक भाई ने मुझे एक साधना संबंधी पुस्तक दी और प्रसाद दिया जिसे खाने के बाद संतुष्टता का एहसास हुआ। एक अन्य भाई को मेरी परिस्थिति से अवगत कराया गया तो उसने घर जाने की सलाह दी। मुझे भी यही उचित लगा और मैं घर सकुशल पहुँच गया। मुझे देखकर सभी में पुनः ख़ुशी की लहर आ गई। मैंने पुनः पढ़ाई चालू की। कोशिश रंग लाई और मेरा प्रथम श्रेणी में परिणाम आ गया, जो पहले कुछ अंकों के कारण मिस हुआ था। इससे मेरे आगे की पढ़ाई के लिए मार्ग साफ़ हो गया और पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात् एक दवा कंपनी में नौकरी लग गयी।

जीवनसंगिनी मिले तो लक्ष्मी जैसी

नौकरी लगने के बाद आध्यात्मिकता की तरफ लगन और भी बढ़ती गई। सद्गुरु की तलाश में कुछ गुरुओं से मिला, दीक्षा भी ली परन्तु आंतरिक संतुष्टता अल्पकाल की ही रही। दूसरी ओर, मेरे विवाह के लिए भी एक के बाद एक प्रस्ताव आने लगे जिन्हें मैं यह कहकर टालता गया कि अभी पूर्ण रूप से सैटल नहीं हुआ हूँ। मेरी सोच थी कि विवाह करने पर मेरी आध्यात्मिक यात्रा में रुकावट आ सकती है तथा उचित जीवनसंगिनी न मिलने पर जीवन पीड़ा व अशांति में तबदील हो सकता है, जो मैं नहीं चाहता था। एक बार तो कोल्हापुर के महालक्ष्मी मंदिर में लगातार पाँच घण्टे बैठकर श्रीसूक्त (लक्ष्मी स्तोत्र) का पठन किया यह संकल्प लेकर कि मुझे जीवनसंगिनी मिले तो लक्ष्मी जैसी ही मिले। उसके बाद से जो भी विवाह के प्रस्ताव आए, असफल होने लगे।

भक्ति से ज्ञान की ओर

भक्ति बहुत करता था पर प्राप्ति न होने के कारण एक दिन यह दृढ़ संकल्प ले लिया कि अब कल से भक्ति करूँगा ही नहीं जब तक कि मुझे इष्टदेव द्वारा सही मार्गदर्शन व सच्ची प्राप्ति नहीं होती। इसके दो दिन बाद

ही ब्रह्माकुमारीज के गार्डन में अपने आप पहुँच गया जहाँ एक भाई प्रदर्शनी समझा रहा था। प्रदर्शनी का नया ज्ञान मेरी तार्किक बुद्धि को बिलकुल ही स्वीकार नहीं हुआ और अपने प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए मैंने ब्रह्मकुमारीज में सात दिन का कोर्स करने का निश्चय किया। मुझे साप्ताहिक कोर्स पूर्ण करने में लगभग 25 दिन लगे क्योंकि बुद्धि में शास्त्रों का अधिक ज्ञान होने के कारण मन में प्रश्नों का अंबार-सा लगा रहता था और उनके समाधान में काफी समय लग जाता था। कोर्स जब समाप्त हुआ तब भी मुझे पूरा निश्चय नहीं था कि यहाँ पर भगवान ज्ञान देते हैं। परन्तु जिस घड़ी मुरली की पहली लाइन पढ़ी, निश्चय स्थाई हो गया कि ये महावाक्य भगवान के ही हैं, अन्य कोई मनुष्य, साधु, संत या महात्मा इन्हें उच्चार नहीं सकता।

सगाई टूटने से घर में महाभारत

मई, 1997 में मेरा कोर्स पूरा हुआ। कुमार होने और पूरी धारणा पर खरा उतरने के कारण, छः महीने से कम अंतराल में नवम्बर में ही शांतिवन के बेहद डायमंड हॉल में परमात्म मिलन का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहीं पर मैंने पवित्र जीवन जीने का दृढ़ संकल्प भी कर लिया। इसके बाद मई, 1998 में मेरे मना करने के बावजूद मेरा विवाह तय हो गया। एक दिन दोनों परिवारों की तरफ से हमारे मिलने की योजना बनी ताकि हम एक-दूसरे के स्वभाव-संस्कार से परिचित हो सकें। एकांत में अवसर पाकर हमने वार्तालाप शुरू किया। उस समय मेरी दृष्टि-वृत्ति में लेशमात्र भी आकर्षण या झुकाव नहीं था बल्कि पूर्ण वैराग्य की भावना थी। मैंने उनके समक्ष अपने ब्रह्माकुमारी संस्था से जुड़ने की बात रखी और उनसे भी ईश्वरीय शिक्षा ग्रहण करने हेतु सहमति लेनी चाही। मैंने उनसे कहा कि मैंने सन् 2000 तक ब्रह्मचर्य पालन का व्रत ले रखा है, क्या इसमें आपका सहयोग मिल सकता है? उसे उसकी सहेली के माध्यम से इस संस्था के बारे में पहले से ही जानकारी थी। उसका आग्रह था कि गृहस्थी का कर्तव्य पालन करने के पश्चात् इसमें जाना चाहिए। मैंने उन्हें साकार मुरली पढ़कर सुनाई परन्तु उनका विश्वास नहीं बैठा, उन्हें वे शब्द बहुत ही साधारण और सहज लगे। आखिर में वे मेरी बातों पर राजी तो हो गयी पर एक शर्त रख दी कि सन् 2000 तक मैं एक भी मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) को हाथ नहीं लगाऊंगा। मैं हक्का-बक्का रह गया। मुझे उनकी ऐसी शर्त की कल्पना तक नहीं थी। यह तो ऐसा था जैसे जीयदान देकर प्राणवायु पर बंदी लगा देना। मुरली तो आध्यात्मिक जीवन का प्राण आधार है। जिस प्रकार जल बिना मीन जीवित नहीं रह सकती, उसी प्रकार, मुरली के बिना आध्यात्मिक बल मिलना असम्भव है। मैंने उनसे कहा, मेरा अलौकिक जन्म ही मुरली से हुआ है और इसे मैं किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ सकता हूँ। उन्होंने मुझे काफी समझाने की कोशिश की परन्तु मैंने कुछ नहीं कहा और उसी क्षण वहाँ से विदाई ले ली। घर जाने पर मैंने अपने माता-पिता को हमारे बीच हुई बातचीत का संकेत दे दिया। दो दिन बाद लड़की के माता-पिता आये मुझे मनाने के लिए। एक तरफ लड़की की माता जी, दूसरी तरफ मेरी लौकिक माताजी कह रही थी कि अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है, अभी भी कह दो कि मैं इस संस्था में नहीं जाऊंगा तो बात आगे बढ़ सकती है, नहीं तो काफी बदनामी होगी। मैं बीच में बुत की तरह चुपचाप खड़ा रहा लेकिन मुझसे हाँ नहीं बोला गया। मेरी उस समय की दयनीय अवस्था का अंदाजा आप लगा सकते हैं। आखरीन लड़की वालों ने अपना हाथ पीछे ले लिया। लड़की के पिता ने मुझे विवाह के अयोग्य कह अपने संबंधियों में प्रचार किया। मेरे अपने संबंधी, जो मुझे सम्मान की नजर से देखते थे, अब ग्लानि करने लगे व अवज्ञाकारी कहने लगे परन्तु मैं साक्षी बन सब कुछ सुनता रहा। इसके बाद भी विवाह के लगभग 35-36 प्रस्ताव और आये। मैं हर बार इनके चक्रव्यूह से सुरक्षित बाहर निकल गया क्योंकि मुरली मेरा प्राण आधार है और मुरलीधर सदा मन में बसते हैं।

मुरलियों में जितनी भी अलग-अलग प्वाइंट्स आती थी, उन सभी को छाँट कर मैं लिखने लगा। ऐसा करने से मेरा ज्ञान-मंथन भी होता रहा तथा व्यर्थ से मुक्ति मिलने में सहयोग प्राप्त हुआ। मुरली प्वाइंट्स के अलावा जहाँ कहीं भी स्लोगन, सुविचार इत्यादि पर दृष्टि पड़

जाती तो जैसे हंस ज्ञान रत्न चुगता है वैसे मेरे हाथ स्वत: ही उन्हें समेटने को तैयार हो जाते। आज न जाने कितने ज्ञान रत्न जमा हो गये हैं। इस पर मन आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रहता।

ईश्वरीय सेवा की शुरूआत

आफिस जाते समय ट्रेन अथवा बस में ईश्वरीय ज्ञान के चित्रों को निकाल कर बैठ जाता और जैसे ही कोई सवाल पूछता तो ज्ञान देना शुरू कर देता। पहली कंपनी में एम.डी.से लेकर छोटे कामगार तक सभी को ईश्वरीय ज्ञान की जानकारी दी। माता-पिता के गाँव के संबंधियों को भी रजिस्ट्री द्वारा परमात्मा के दिव्य अवतरण व कार्य के बारे में जागरूक किया। वर्ष 2011 में; माताजी, छोटा भाई, उसकी युगल व दो बच्चे तथा अन्य नये सदस्यों के साथ राजयोग शिविर में आबू जाने का संयोग बना। वहाँ पर पहुँच कर सभी को पवित्रता एवं नि:स्वार्थ सेवा का अलौकिक अनुभव हुआ जो उन के स्मृति पटल पर आजीवन रेखांकित हो चुका है।

उन्नति का एकमात्र आधार – मुरली

पिछले 21 वर्षों से, सारे खानदान में अकेला ब्रहमाकुमार, एक बल एक भरोसे व मुरली के आधार पर ज्ञान में चल रहा हूँ। मुझे आज तक कोई साक्षात्कार इत्यादि नहीं हुए हैं और न ही मुझे इसकी कोई आस है। आस है तो इन बातों की 1.पाँच विकारों पर पूर्ण विजयी बन स्वराज्य अधिकारी बनना 2. अन्य आत्माओं को भी ईश्वरीय ज्ञान व अधिकार से परिचित कराना 3.चेहरे व चलन से बापदादा की प्रत्यक्षता करना 4. मनसा सेवा द्वारा सकाश में उन्नति करना। आज भी मैं अपनी उन्नति का एक मात्र आधार मुरली को ही मानता हूँ। शुरू से ही मुरली के प्रति मेरे दिल में अगाध श्रद्धा व आदर रहा है और मैं सदा प्रयत्नशील हूँ कि ज्ञान सागर की एक भी अनमोल वाणी चाहे अव्यक्त, चाहे साकार, मिस न हो। साथ ही यह भी दृढ़ धारणा है कि ये महावाक्य इस आत्मा के दिल में समाकर, कर्मों द्वारा प्रत्यक्ष हों। स्थूल सेवा का मौका सामने से आये तो अवश्य करता हूँ, नहीं तो स्वस्थिति बनाने या मनसा सेवा में स्वयं को व्यस्त रखता हूँ। जब से बाबा ने चलते-फिरते पाँच स्वरूपों का अभ्यास करने को कहा है तब से आज तक यह चालू है। इसके अनुभव का तो वर्णन ही नहीं कर सकता क्योंकि यह तो हर समय का सुरक्षा कवच ही बन चुका है। मन की स्थिरता, बुद्धि की एकाग्रता, व्यर्थ से मुक्ति, विकारों का शमन, दैवी गुणों का तीव्र विकास, स्वदर्शन चक्र के अभ्यास में निरंतरता इत्यादि अनुभव इससे हुए हैं। वर्तमान में, विभिन्न विधियों से इसका अभ्यास चल रहा है। ज्ञान के विषय में मेरा विचार है कि इसे जी भर कर ग्रहण करना चाहिए, झोली भर जाए तो भी कम ही समझना चाहिए और साथ-साथ दान भी करते रहना चाहिए। इस ईश्वरीय ज्ञान से ही आत्मा का तीसरा नेत्र खुलता है, माया को पहचान कर आत्मा आधा कल्प से चली आ रही उसकी गुलामी से मुक्त होती है और स्वर्ग का राज्य अधिकार प्राप्त करती है।

लौकिक परिवार की तरफ से अब कोई भी विघ्न नहीं है। शुभ भावना है कि वे भी इस सत्य ज्ञान को स्वीकार कर अपना भाग्य बनायें। मेरे द्वारा कारणे-अकारणे, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें यदि कोई कष्ट पहुँचा भी हो तो क्षमाप्रार्थी हूँ। मुझे इस बात का सदा नशा रहता है कि मैं परमात्मा पिता की सर्वश्रेष्ठ अव्यक्त रचना हूँ तथा बापदादा की अव्यक्त पालना व अदृश्य मदद से आगे बढ़ रहा हूँ। साथी ब्रह्माकुमार-कुमारी भाई-बहनों के सहयोग व मार्गदर्शन के लिए आभार प्रकट करता हूँ।

जीवन में जो भी समस्याएँ या विषम परिस्थितियाँ आई वो मुझे पाठ पढ़ाने व अनुभव देने हेतु आई इसलिए ड्रामा का आभारी हूँ। अन्य भाई-बहनों से भी, समय रहते आने वाली सतयुगी दुनिया में सुख-शान्ति का ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त करने की विनती करता हूँ ताकि अंत में पश्चाताप न करना पड़े।

ये दिल हर पल गाता रहता,
एहसान तुम्हारा ओ बाबा।
बदली हमारी किस्मत पाकर
प्यार तुम्हारा ओ बाबा, उपकार तुम्हारा ओ बाबा।।
दिल कहे बाबा तेरा शुक्रिया, तूने ही भाग्य बनाया।
हर पल तेरे गुण गाऊँ, बाबा। ■■■

बाबा ने कहा, बच्ची बहुत शुद्ध है

■■■ ब्रह्माकुमारी शान्ता बहन, अजमेर

मेरा जन्म अखण्ड भारत के कराची शहर में 27 सितम्बर, 1940 में हुआ। लौकिक माताजी-पिताजी बहुत धार्मिक प्रवृत्ति के थे। पिताजी एयरफोर्स में थे। बाल्यकाल से ही मैं भक्ति में तल्लीन रहती थी। श्रीकृष्ण जी के साथ मेरा बहुत ही प्यार था। जब भी रेडियो आदि में मीरा के भजन सुनती थी तो भाव-विभोर हो जाती थी। सन् 1955 में जब दिल्ली, करोल बाग में ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र खुला तो माताजी और चाची जी वहाँ जाने लगी। वे घर आकर बताती कि बहुत ही पवित्र देवियाँ आई हैं और वे कहती हैं कि बहुत ही जल्दी सृष्टि पर श्रीकृष्ण आने वाले हैं। यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई तथा अपनी चचेरी बहन के साथ सेवाकेन्द्र पर जाना शुरू कर दिया।

स्वभाव में आया परिवर्तन

तब दादी प्रकाशमणि उस सेवाकेन्द्र की निमित्त इन्चार्ज थीं। अमृतवेले उठकर कैसे भगवान को याद करना चाहिए, खान-पान, रहन-सहन कैसा होना चाहिए आदि जो भी धारणाएँ दादी जी बताते थे, मैं घर में आकर उन्हें हूबहू निभाने लगी। मेरे पिताजी के मन में इस संस्था के बारे में तब काफी भ्रान्तियाँ थी इसलिए वे मुझे आश्रम पर जाने से रोकने लगे। मैंने उनको कहा, वहाँ जाकर मैंने कोई गलत बात सीखी है क्या? मेरे स्वभाव में कितना परिवर्तन आ गया है। किसी से लड़ना, झगड़ना नहीं, सभी के साथ मधुरता से बोलना सीखा है। मैंने सिनेमा देखना, बाजार का खाना, फैशन करना आदि छोड़ दिया है, इस प्रकार अच्छी और सात्विक बातें ही तो सीखी हैं। आप मुझे एक भी गलत बात बता दीजिए, जो मेरे व्यवहार में आई हो, तो मैं जाना बन्द कर दूँगी।

पिताजी आए पाँव पकड़ने

उन दिनों मैं मैट्रिक करके टीचर्स ट्रेनिंग कर रही थी। सुबह बिना प्याज-लहसुन का खाना बनाकर जाती थी और शाम के लिए टिफिन में डालकर रख जाती थी। शाम को जब खाने लगती थी तो पहली ग्राही में ही प्याज की महक आ जाती थी। मेरे पीछे से मेरे टिफिन में बारीक-बारीक काटकर प्याज डाल दिए जाते थे। तब मैं उस सब्जी को एक तरफ रखकर बड़े प्यार और शान्ति से रूखी रोटी खा लेती थी। गुस्सा नहीं करती थी कि इन्होंने प्याज क्यों डाला। पिताजी मेरी हर एक बात को नोट करते थे। कुछ दिन उन्होंने मुझे रूखी रोटी खाते देखा। उन्हें मेरे प्रति बड़ा आदर भाव आया और आकर मेरे पैर पकड़ने लगे कि यह तो हमारे घर में देवी पैदा हुई है। फिर घर के सभी सदस्यों को इकट्ठे कर कहने लगे कि आज के बाद इसे कोई तंग न करे। प्याज के बिना भोजन खाने से कोई मना न करे।

इसके बाद उनका दृष्टिकोण बदलना प्रारम्भ हो गया। यहाँ मैं यह कहना चाहूँगी कि घर में रहते, ईश्वरीय ज्ञान की धारणाएँ अपनाते, हमें एक-दूसरे के साथ प्रेम से चलना है। किसी के भी अवगुण नहीं देखने हैं। कोई हमारे साथ गलत व्यवहार भी करता है तो भी हमें उसके प्रति शुभभावना रखनी है और उचित व्यवहार रखना है, इससे घर का वातावरण बिल्कुल सुधर जाता है और शान्तिमय बन जाता है।

सजे-सजाए श्रीकृष्ण को देखा

सन् 1956 में मैं पहली बार बाबा से मिलने माउन्ट आबू गई। जैसे ही बाबा से मिली तो बाबा साधारण नहीं दिखे। बाबा का वर्तमान रूप गायब होकर उनके स्थान पर श्रीकृष्ण का सजा-सजाया रूप आ गया। जब बाबा ने दृष्टि दी तो एकदम देह से न्यारी स्थिति में स्थित हो गई। बाबा ने कहा, बच्ची बहुत शुद्ध है। फिर बड़े प्यार से मेरे सिर पर हाथ फिराकर कहा, बस, ज्ञान का बीज पड़ गया है, अब इसका फल बहुत अच्छा निकलेगा। बाबा ने इसी वरदान को दो-तीन बार दोहराया तो मुझे बहुत शक्ति

मिली। मैंने पक्का कर लिया कि अपने जीवन को पवित्र और सुख-शान्तिमय बनाकर दूसरी आत्माओं का जीवन भी सुख-शान्ति वाला बनाऊँगी।

व्यर्थ चिन्तन खत्म हो गया

मातेश्वरी जगदम्बा के सामने जाते ही अपना स्वरूप दिखाई देने लगता था कि अब हमको अपनी क्या-क्या कमियाँ खत्म करनी हैं। वे सम्पूर्ण स्वरूप नजर आती थी। मातेश्वरी ज्ञान-योग की पढ़ाई में बहुत व्यस्त रहती थी। सब कुछ करते हुए भी उनके चेहरे से हमें सीखने को मिलता था। एक बार मैंने उनको कहा, माँ, मेरे लौकिक घर वाले मुझे बहुत बन्धन डालते हैं, मुझे सेवाकेन्द्र पर आने नहीं देते हैं। तब मातेश्वरी जी ने मुझे बहुत अच्छी शिक्षा दी कि देखो, जब भी तुम घर जाती हो, तुम्हारे मन में यही व्यर्थ चिन्तन चलता है कि पिताजी ज्ञान को नहीं मानते हैं या पिताजी मेरे को सेवाकेन्द्र पर आने नहीं देते हैं, ऐसा चिन्तन चलता है ना? मैंने कहा, हाँ। तो मातेश्वरी जी ने कहा, अपना यह चिन्तन खत्म करो। जब भी घर जाओ तो यही सोचो कि मैं शिव की शक्ति हूँ और शिवबाबा जो नई दुनिया की स्थापना कर रहे हैं, उसमें मैं उनकी मददगार हूँ। जब यह सोचोगी तो उनके प्रति जो व्यर्थ चिन्तन चलता है कि 'ये मना करते हैं, ये मना करते हैं' वो तुम्हारा नहीं चलेगा। इसके बाद मैंने पिताजी के प्रति ये शुभ भाव रखने शुरू कर दिए कि वे बहुत अच्छे हैं और उनके प्रति जो दूसरे विचार आते थे वो धीरे-धीरे बन्द हो गए।

बाबा की प्रेरणाएँ

मैं 5-6 साल तक घर से सेवाकन्द्र आती-जाती रही। इसके बाद जब मेरी आन्तरिक स्थिति मजबूत हो गई तो घरवालों ने बन्धन भी कम कर दिए। मेरे मन में आता था कि अब मैं ईश्वरीय सेवा का अपना पार्ट शुरू करूँ। तब दादी-दीदी की प्रेरणा से मैं सेवार्थ जयपुर आई। जयपुर के लिए बाबा की प्रेरणा थी कि कोई बड़े हॉल वाला मकान देखो जिसमें म्युजियम बन सके, चित्रों द्वारा बाबा का अमूल्य ज्ञान सिद्ध हो सके। इतनी ऊँची हस्ती की प्रेरणा तो साकार होनी ही थी। हमें एक बड़े हॉल वाला मकान मिल गया। वहाँ म्युजियम बनाया गया। म्युजियम के लिए बाबा की इतनी प्रेरणाएँ थी जो रोज अपने हस्तों से पत्र लिखकर भेजते थे कि इस चित्र में यह बनाना, उस चित्र में यह बनाना आदि-आदि।

जब म्युजियम बनकर तैयार हो गया तो बाबा का दिल हुआ कि मैं भी जाकर देखकर आऊँ। बाबा ने पूरी तैयारी कर ली। टिकिट भी बन गई। बाबा ने कहा, रात को पहुँचूँगा, सुबह लौट आऊँगा। जब बाबा की सारी तैयारी हो गई तब शिवबाबा ने संतरी दादी को ट्राँस (ध्यान) में बुलाया और कहा, किससे पूछकर यह सारी तैयारी की है? तब ब्रह्मा बाबा ने प्रोग्राम कैन्सल कर दिया। बाबा पग-पग पर शिवबाबा के आज्ञाकारी थे। हमने भी बाबा के इस आज्ञापालन के गुण से बहुत कुछ सीखा।

बाबा फ्राकदिल थे

बाबा से जो पालना मिली वह हर पल याद आती है। बाबा बहुत ज्यादा फ्राकदिल (विशाल दिल) और रॉयल्टी वाले थे। मुझे याद आता है, एक बार दादी आलराउन्डर ने बाबा को फोन किया कि बाबा, मकान बहुत बड़ा है, किराया बहुत भरना पड़ता है, हमारा विचार है, कोई छोटा मकान ले लें तो अच्छा रहेगा। तब बाबा ने हाँ या ना में तो जवाब नहीं दिया पर शिक्षाप्रद हँसी की एक बात सुनाई कि हाँ बच्ची, बाबा तो आप शक्तियों को शेर पर सवारी कराना चाहते हैं लेकिन शक्तियाँ गधे पर ही सवारी करना चाहें तो बाबा क्या कर सकते हैं। बाबा ने यह बात बहुत ही रमणीकता से बोली। बाबा बहुत रॉयल्टी से सेवा करवाना चाहते थे और हमारे स्वभाव में भी बहुत रॉयल्टी देखना चाहते थे। ■■■

बाबा ने कहा, बच्ची अपना फैसला खुद करेगी

■■■ ब्रह्माकुमारी राज, वडोदरा (गुजरात)

मेरा लौकिक जन्म सन् 1947 में, ब्राह्मण परिवार में, अम्बाला के पास डेराबस्सी गाँव में हुआ। लौकिक में हम तीन बहनें और एक भाई है। पिता जी की सरकारी नौकरी दिल्ली में थी। सन् 1958 में हमें दिल्ली, सरोजिनी नगर में सरकारी मकान मिला। सन् 1959 में सर्दी के मौसम में हम सब धूप सेंक रहे थे तो एक बूढ़ी माता आई और एक कागज हाथ में लेकर उसे पढ़कर सुनाने लगी कि भगवान आ गया, यह उसकी मुरली है, आप सब ज्ञान का कोर्स करने आना, सेवाकेन्द्र सामने ही है। सेवाकेन्द्र हमारे घर के सामने ही था, तो लौकिक माँ जाने लगी। उन्होंने पिताजी को भी बताया, उनको भी अच्छा लगा, वे भी जाने लगे। मेरी आयु उस समय 12 वर्ष थी। माता-पिता अपने साथ-साथ हम चारों बहन-भाइयों को भी ले जाते थे। हमें योग में बैठना बहुत अच्छा लगता था।

अमरनाथ से अमरप्रकाश

माता-पिता की लगन, रुचि तथा सेवाभाव के आधार पर लौकिक पिता को बहुत जल्दी मधुबन जाने का सौभाग्य मिला और जब वे लौटकर आये तो उनका अनुभव और अधिक अच्छा हो गया था। वे जब साकार बाबा से मिले, उनकी गोद ली तो बाबा ने नाम पूछा। उन्होंने बताया कि मेरा नाम अमरनाथ है। बाबा ने कहा, बच्चे, आज से तुम्हारा नाम अमरप्रकाश है। दूसरा, उनके कान में बाबा ने बोला, तुमको पाण्डव सेना बनानी है। वे सोच में पड़ गये कि पाण्डव सेना मैं कैसे बनाऊँगा? इसी बीच सरोजिनी नगर का ईश्वरीय सेवाकेन्द्र स्थानान्तरित होकर हमारे घर खुल गया।

चार बच्चों वाली माँ

बचपन में मुझे विचार आते थे कि भगवान कौन हैं और कैसे हैं? दूसरा, मेरे मन में विचार था कि मुझे मेरा जीवन कुछ हट कर बनाना है जिसमें सेवा-सहयोग से कुछ करना है, वह रास्ता भी जैसे बचपन में ही मिल गया। उस वातावरण ने जीवन को उचित दिशा दे दी। लौकिक परिवार को लेकर पिताजी पुन: मधुबन गये। जैसे ही हम परिवार सहित पाण्डव भवन में प्रवेश हुए तो सबका अनुभव था कि कोई चुम्बकीय शक्ति हमें ऊपर-ऊपर ले जा रही है, जैसेकि हम धरती पर हैं ही नहीं। बहुत अद्भुत वातावरण लगा। एक झलक से बाबा को भी देखा। फिर तो सायंकाल 5.30 बजे इशु दादी के ऑफिस-हॉल में ही प्यारे बाबा के साथ मिलन हुआ। उस शाम को 35 भाई-बहनें योगयुक्त होकर मम्मा-बाबा के सामने बैठे हुए थे। फिर मिलने का क्रम शुरू हुआ। सब धीरे-धीरे पहले मम्मा की फिर बाबा की गोद में जा रहे थे। जब लौकिक माँ मिलने गई तो बाबा ने पूछा, बच्ची, नाम क्या है? वे बोली, शान्ति देवी। फिर बाबा ने पूछा, कितने बच्चे हैं? तो माताजी ने बोला, चार। बाबा बोले, बच्ची, योगिन हो। जब भी बाबा से मिलो तो कहना कि मैं चार बच्चों वाली माँ हूँ। बच्ची, बाबा आपसे बहुत सेवा करवायेगा।

लौकिक भूलने लगा

फिर जब मैं बाबा से मिली तो बाबा बोले, यह बच्ची अपना फैसला खुद करेगी। मेरे मन में था कि मुझे लौकिक घर नहीं छोड़ना है। पढ़ाई करके, नौकरी करूँगी और बाबा की सेवा भी करूँगी। मुझे पढ़ाने में रुचि थी। मैं पढ़ाई पूरी करके शिक्षिका का कार्य करती रही। बाबा से मिलकर हममें से हरेक के मन पर अलौकिक छाप पड़ी। लौकिक भूलने लगा, बाबा की याद आने लगी। मन करता, बस, बाबा को ही देखते रहें। बाबा का रूहानियत भरा व्यक्तित्व अपनी ओर खींचता रहता। महसूस होता कि कोई बहुत अपना मिला है। इतनी छोटी आयु में यह प्रभाव महसूस हुआ। दिल अन्दर से यही कहता कि संसार में बाबा जैसा कोई दूसरा हो ही नहीं सकता। बाबा के मुख से किसी बच्चे के लिए जो भी बोल निकले, साकार अवश्य हुये।

बहती नदी बनना है

सन् 1962 में मम्मा का दिल्ली आना हुआ और मम्मा के निमित्त बहुत सुन्दर कार्यक्रम रखा गया। मम्मा सर्व के मनों को हल्का करने वाली थी। योगयुक्त नैन-चैन से मम्मा सबके दिलों को जीत लेती थी। वे हर कार्य

में रेग्यूलर, एक्यूरेट और पंकचुअल थीं। उनकी कथनी-करनी एक दिखाई देती थी। कोई प्रश्नों का बोझा लेकर आते और सामने जाते ही सब भूल जाते थे। इतना प्रभाव मम्मा की रूहानी शक्ति का पड़ता था। ऐसी थी मीठी प्यारी माँ। बाबा-मम्मा सदा यही शिक्षा देते कि बहती नदी बनना है। इसका अर्थ है, बेहद में रहना है।

ड्रामानुसार मैंने मेरा फैसला सन् 1975 में दीदी के विशेष कहने पर किया। उन्होंने मुझे हद से निकल बेहद में जाने के लिए प्रेरित किया। उनके महावाक्य ने मुझे सोचने पर मजबूर किया। परिवार पूरा साथ था, बंधन का नाम नहीं था। एक पल में 'जी हाँ' कर दिया। मधुबन आई, गुजरात का चक्र लगाया और फिर मुम्बई, गामदेवी में डेढ़ साल सेवारत रही। इसके बाद 27 मार्च, 1977 से वडोदरा (मंगलवाड़ी) सेवाकेन्द्र पर सेवायें दे रही हूँ। ■■■

बाबा ने कहा, 'तुम सफलता का सितारा हो'

■■■ ब्रह्माकुमारी लक्ष्मी बहन, हाँसी (हरियाणा)

मेरा जन्म सन् 1958 में हरियाणा के भिवानी शहर में हुआ। बचपन से ही मुझे भक्ति में विशेष रुचि थी। दादा जी हम बच्चों को रामायण और भागवत की कथाएँ सुनाया करते थे। सन् 1962 में हमारे लौकिक परिवार को ईश्वरीय ज्ञान मिला। लौकिक माताजी और तीन बड़े भाइयों के साथ मैं भी प्रतिदिन सेवाकेन्द्र पर जाने लगी। भले ही मेरी आयु छोटी थी पर बाबा के घर जाना और मुरली सुनना मुझे बहुत अच्छा लगता था।

बाबा ने रखा सिर पर हाथ

जब साकार बाबा देहली में, मेजर की कोठी में आए तब भिवानी से काफी भाई-बहनें तथा मैं और लौकिक माताजी भी गोपी दादी के साथ बाबा से मिलने गए थे। उस छोटी आयु में ज्ञान की इतनी समझ न होने के बावजूद, बाबा से मिलकर मुझे बहुत-बहुत अच्छा लगा। ऐसा महसूस हुआ मानो बाबा मेरे पिता हैं। लौकिक पिता के प्यार से भी ज्यादा प्यार बाबा से मिला, ऐसा अहसास हुआ। बाबा एकदम लाइट के फरिश्ते जैसे लग रहे थे। वैसे तो मुझे किसी से भी मिलने-जुलने में डर लगता था, संकोच होता था परन्तु बाबा से मिलकर बहुत अपनापन लगा कि बाबा मेरा है। बाबा ने मेरे सिर पर हाथ रखा, अपनी गोद में बिठाया और माता जी को ये वरदानी शब्द कहे, यह बच्ची आगे चलकर बाबा की सेवाओं में बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान देगी।

कदम-कदम पर मिली है सफलता

लौकिक पिताजी भक्ति भावना वाले तो थे लेकिन ईश्वरीय ज्ञान में नहीं चलते थे। वे चाहते थे कि मैं अपनी पढ़ाई जारी ही रखूँ। उनके कहे अनुसार पढ़ाई को जारी रखते हुए मैंने एम.एस.सी. तथा बी.एड. किया और फिर लेक्चरर के रूप में कुछ समय तक सरकारी नौकरी भी की। नौकरी करना मेरा उद्देश्य नहीं था। मेरा एकमात्र उद्देश्य था बाबा की विश्व सेवा के लिए जीवन समर्पित करना। बाबा के अव्यक्त होने के बाद सन् 1970 में मैं पहली बार मधुबन गई। अव्यक्त बापदादा से मिली। तब बाबा एक-एक बच्चे से मिलते थे, टोली और वरदान देते थे। बाबा ने मुझे वरदान दिया, 'बच्चे, तुम सफलता का सितारा हो।' इसके बाद हर साल बाबा मिलन में जाती तो बाबा मिलता-जुलता वही वरदान हर बार देते। कभी कहते, सफलता तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है। कभी कहते, तुम विजयी रत्न हो, ऐसा लगभग 7-8 साल तक होता रहा। इस ईश्वरीय जीवन में बचपन से लेकर आज तक मुझे कदम-कदम पर सफलता प्राप्त हुई है। इस प्रकार बाबा का वरदान फलीभूत होता आया है। ■■■

राष्ट्रीय युवा दिवस 12 जनवरी पर विशेष...

उठो युवा

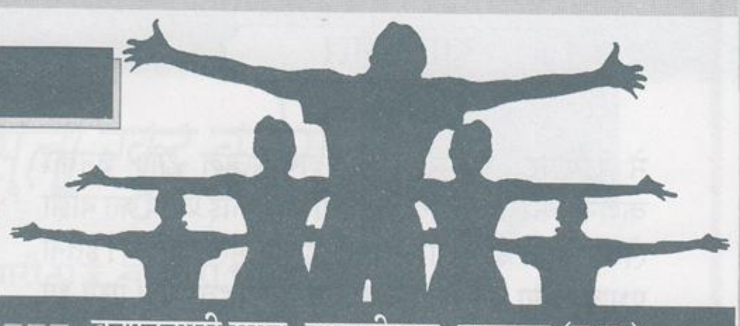

ब्रह्माकुमारी सुमन, जानकीपुरम, लखनऊ (उ.प्र.)

माया की 1000 चालों को मात देने वाले, सोने की लंका की चकाचौंध से, चतुरसुजान बन साफ निकलने वाले, रावण के हर लुभावने आकर्षण से उपराम रहने वाले, टी.वी., फिल्मों, विकारों की संक्रामक जाल से स्वयं को बचाने वाले, संबंधों की सुनहरी रस्सी के फंदों से मुक्त रहने वाले, धन एवं साधनों की इच्छाओं रूपी सुरसा के खतरनाक वारों से सुरक्षित रहने वाले, समस्याओं को समाधान में बदलने वाले, विघ्नों की कालिमा को ज्ञानसूर्य की रोशनी से दूर करने वाले, गृहस्थी की तंग गलियों और मान्यताओं की पगडंडियों को छोड़ निर्बन्धन हाइवे पर चलने वाले, नाम-मान-शान की बैशाखी का त्याग कर स्वमान के रॉकेट में उड़ने वाले, त्याग-तपस्या का आसन ले, वैराग का व्रत धारण कर, सेवा द्वारा तीव्र पुरुषार्थ करने वाले मेरे प्रिय युवा भाइयो, उठो........आपने वो कार्य किया है जिसे लोग 60 वर्ष के बाद करने की सोचते हैं। पर मेरे भाइयो, जो त्याग का बीज आपने डाला था, क्या वह अंकुरित हुआ? क्या वैराग्य की चमक अभी भी दृष्टिगोचर है? जो अग्नि आपने जलाई थी, वो अभी भी प्रज्वलित है? मेरे भाई, आप वैराग्य का छन्द हो, तपस्या का प्रचण्ड कुण्ड हो, सेवाओं की मजबूत धुरी हो, पहचानो अपने आपको। आपकी जिन्दगी उधार की नहीं है, आपकी सांस समय की कच्ची डोर में नहीं बँधी है, आप भारत के उज्ज्वल भविष्य हो, अपनी गरिमा को गे गे की चद्दर में मत लपेटो। समय का गणित मत लगाओ, विज्ञान के अँधेरे में अध्यात्म के प्रकाश को मत छिपाओ, ब्याज से जीवन नहीं चलता, अब उठाओ हिम्मत का गाण्डीव और जरा सामने देखो, दिव्य जीवन के कर्मक्षेत्र में कौन-कौन युद्ध के लिए खड़े हैं?

रक्षा-कवच

मेरे भाई, यह अलौकिक जीवन है, कोई प्रोफेशन नहीं है। आप सिर्फ ज्ञान सुनाने वाले नहीं हो कि सेवा पूरी हुई, संगठन से निकले, स्टेज से उतरे तो चाल-ढाल, रहन-सहन, बोल-चाल, खान-पान, उठना-बैठना सब बदल जाये। प्रोफेशन में ड्यूटी पूरी होते ही कपड़े बदल जाते हैं, हर क्रियाकलाप बदल जाता है पर जो जीवन ही है वह कैसे बदलेगा? हम किसी और को धोखा दे सकते हैं पर अपने आपको और परमात्मा को नहीं। जिसको नम्बर देने हैं उसको सब पता है, जिसको नम्बर मिलने हैं उसको सच पता है, तो फिर तीसरे के पता होने या न होने का कोई अर्थ ही नहीं है। जो भी बाबा ने नियम-धारणायें बताई हैं उन्हीं में हमारा फायदा है। आप एक जिम्मेदार सिपाही हो, विश्व की स्टेज पर हो, सारा जहान आपको देख रहा है, दुश्मन भी चारों ओर से मुस्तैदी से वार करने के लिए तैयार है, अँधेरा नहीं है पर आप अपनी आँखें मत बन्द करो, निश्चय के उजाले में परिस्थितियों का पथ भी सुगमता से पार हो जाता है। उठो! अपने कर्तव्य को फिर से देख लो, पहचान लो अपने लक्ष्य को, निहारो जरा ध्यान से अपनी मंजिल को, छूना है आपको आकाश को, पाना है आपको सदाकाल की सफलता को, हराना है आपको आधाकल्प के शक्तिवान रावण को। रावण दुश्मन रूप बदलता है, वो बाहर से नहीं, अन्दर से आता है। ऐसा रूप रखता है जैसे कि मर गया हो पर होता वो बेहोश है परन्तु आप भी त्रिनेत्री व त्रिकालदर्शी हो, बाहर-बाहर से मत देखो, अलबेलेपन के चश्मे को उतार कर तीसरे नेत्र से देखो, फिर दुश्मन कहीं भी छिपा होगा तो भी आपकी नजर से बच नहीं सकेगा, इसके लिए निम्नलिखित रक्षा-कवच धारण करो।

अटेन्शन का पहरा

अटेन्शन को पहरे की तरह रखो तो आलस्य, सुस्ती, लापरवाही, टालमटोल, बहानेबाजी आदि दुश्मन दूर से ही नमस्कार करेंगे और हमेशा चुस्त, फुर्त, तरोताजा रहने के कारण उमंग-उत्साह साथ रहना शुरू कर देंगे। इससे हर कार्य नवीनता के साथ रुचिकर होगा

और सफलता के साथ मंजिल पर अति शीघ्र कदम होंगे। जीवन भर के टेन्शन से फ्री रहने के लिए व संसार का टेन्शन न बनने के लिए अटेन्शन का पहरा देना ही पड़ेगा। अटेन्शन अगर पहरे की तरह जीवन का एक संस्कार बन जाये तो प्रगति का पथ प्रकाशित होता रहेगा। प्रगति प्रयत्न का ही फल है। अटेन्शन के पहरे में अलर्टनेस की सीटी और साथ में एक्टिवनेस का छोटा-सा डंडा भी साथ में हो तो हर मंजिल सहज ही कदमों में होती है। जगह-जगह लिखा होता है, सावधानी हटी-दुर्घटना घटी। रास्ते कोई भी हों, अटेन्शन अनिवार्य हो जाता है, नहीं तो दुर्घटना से बचना मुश्किल होगा। राहें मंजिलें नहीं होती, राहें तो मंजिल तक ले जाने वाली होती हैं। हमें रास्तों पर भटकना नहीं है। जैसे जब गाँधी जी लॉ की पढ़ाई करने इंग्लैण्ड गये थे, तो वहाँ के वकीलों को देखकर तय किया कि हमें भी अच्छा वकील बनना है, तो एक अच्छे वकील के लिए तो लम्बे बाल रखना और डांस सीखना अनिवार्य है। इसके कारण गाँधी जी ने न सिर्फ अपने बाल काफी लम्बे किये बल्कि डान्स भी सीखने लगे। बाद में उन्हें समझ में आ गया कि यह ठीक नहीं है, यह है रास्ते पर भटकना। जिस पथ पर आपने चलने का सोचा है वहाँ आकर्षणों की कई प्रकार की फिसलन व विकर्षणों की रपटनें हो सकती हैं। गीता में कहा गया है कि जब-जब धर्म की ग्लानि होती है, तब-तब मैं आता हूं। अब गौर से देखा जाए तो आज अगर कोई झूठ न बोले, ईमानदारी से चले तो लोग उस पर ताने मारते हैं, उसकी उपेक्षा करते हैं, उसके काम में बाधा पहुंचाते हैं, उसकी निन्दा करते हैं, ये धर्मग्लानि ही तो है। दूसरी बात, कोई चाहे जिस भी प्रकार नैतिक-अनैतिक तरीके से धन का स्वामी है, उसे लोग बड़ा आदमी मान कर सम्मान देते हैं, ये धर्मग्लानि ही तो है। ऐसे समय पर हर कदम पर अटेंशन चाहिए क्योंकि अधर्म का विनाश सिर्फ परमात्म ही कर सकते हैं पर अधर्म में लिप्त होने से स्वयं को बचाया जा सकता है। मान लीजिए, किसी ने कुसंग में आकर शराब पीना शुरू कर दिया और उसका आदी बन गया। उसे शराब छोड़ना बहुत मुश्किल लगता है। इसे छोड़ने के लिए बाहर से किसी न किसी प्रकार का सहारा लेना पड़ता है, लेकिन अगर उसने पहले ही कुसंग से अपने को बचाया होता तो आज उसे शराब क्या, किसी भी बुराई का गुलाम नहीं बनना पड़ता। मेरे युवा भाइयो, तुम्हें संसार को भी ऐसी दिशा देनी है, जो संसार स्वर्णिम शिखर की ओर अग्रसर हो इसलिए तुम्हें हर कदम पर अटेन्शन बहुत-बहुत जरूरी है।

मर्यादा की दीवार

मर्यादा की रेखा नहीं, मर्यादा की दीवार जिससे दुश्मन झाँक भी न सके। जब दृष्टि जाती है तो संकल्प चलते हैं। दृष्टि इतनी ऊँची हो कि उसकी ऊँचाई को कोई व्यर्थ विचार छू भी न सके, तभी सुरक्षित रह सकते हैं। वैसे लक्ष्मण की एक लकीर भी सीता को सुरक्षित रख सकती थी परन्तु सीता ने मर्यादा की रेखा पार कर दी तो कहाँ पहुँच गई! अत: जीवन को समस्याओं या शत्रुओं से बचाने के लिए मर्यादा की दीवार बना लेनी चाहिए। मर्यादाएं अमोघ सुरक्षा कवच हैं। पौराणिक सावित्री की कथा में उसके पतिव्रत की मर्यादा के आगे धर्मराज को भी झुकते दिखाया गया है। अहिंसा के पुजारी ने भी अपनी मर्यादा में रहकर ही भारत को आजाद कराया। मर्यादायें हमारे जीवन की आधार स्तम्भ हैं, जो समाज को भी सुकून और भविष्य को भी श्रेष्ठतम् आधार दे सुखमय और निश्चिन्त बनाती हैं। मर्यादाएँ अनेकों को पथ विमुख होने से बचाती हैं।

जीवन का शास्त्र – आत्म शास्त्र

आज की दुनिया में हर व्यक्ति ने जीवन के शास्त्र को अर्थशास्त्र बना लिया है इसलिए हर कोई आँखें बन्द करके, विवेक को तलाक देकर बस अर्थ के पीछे भाग रहा है। हर वर्ग का परम उद्देश्य सिर्फ अर्थ की तलाश है। अर्थ के पीछे भागने से न सिर्फ सच्चा सुख छूटा बल्कि मन की शान्ति भी खो गयी। छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब हरेक का स्वप्न बिना अर्थ के भी अर्थ उपार्जित करना है। कई बार जीवन निर्वाह के लिए कुछ अर्थ की तो सचमुच आवश्यकता होती है परन्तु कितने लोगों के पास तो अथाह अर्थ है, उसके बाद भी जीवन के सुख-शान्ति, अर्थ के पीछे गवाँ रहे हैं। शास्त्रों में मनुष्य की आयु 100 वर्ष मानकर उसको 4 भागों में बाँटा गया है, जिसमें 25 वर्ष ब्रह्मचर्य, अगले 25 वर्ष गृहस्थ, अगले 25 वर्ष संन्यास और अगले 25 वर्ष वानप्रस्थ के परन्तु आज अगर कोई 95 वर्षों का भी शरीर छोड़ता है तो वह गृहस्थी ही होता है। अब शान्ति का सागर हमें शान्ति का शास्त्र पढ़ाने आया है, अब वो पढ़ना है। सारा संसार क्रोध की प्रचण्ड ज्वाला में धधक रहा है और युवाकाल की

ऊर्जा सिर चढ़कर विध्वंसकारी बनती जा रही है। इसके समाधान के लिए शान्ति का शास्त्र पढ़ना है। जीवन में किसी भी कर्म के पन्ने खोलने से पहले ये शान्ति का शास्त्र उठाकर पढ़ना है। शान्ति का शास्त्र, हार को भी जीत में परिवर्तन करता है। आज जहाँ दोस्त भी जरूरत पड़ने पर दुश्मन की लाइन में खड़ा नजर आ जाता है, वहीं ये शान्ति का शास्त्र दुश्मनों के दिल में भी सहयोग की भावना जाग्रत कर देता है। आज देशों की लड़ाई जन-जन के दरवाजे से गुजरती हुई हर मन की दहलीज में प्रवेश कर खतरे की घंटी बजा रही है, इसलिए अब शान्ति का शास्त्र अपने जीवन का शास्त्र बना, विश्व शान्ति के साथ विश्व बन्धुत्व की भावना फैलानी है।

सत्य का ब्रह्मास्त्र

सत्य का आज तक कोई विकल्प नहीं मिला। सत्य सिर्फ परमात्मा को ही कहा जाता है, इसी कारण ही गुप्त होते हुए भी वे सबके दिल में, सबसे प्रिय जगह बनाये हुए हैं। जैसे ब्रह्मास्त्र कभी खाली नहीं जाता, इसी प्रकार सत्य कभी छिप नहीं सकता अथवा कभी निष्फल नहीं जाता। सत्य को किसी बैसाखी की आवश्यकता नहीं। इसलिए मेरे भाई, जहाँ झूठ ने सारे संसार पर आधिपत्य जमा लिया हो, वहाँ सत्य पथ पर चलना मुश्किल तो हो सकता है पर नामुमकिन नहीं। अँधेरे में ही तो उजाले की आवश्यकता होती है अत: आप सत्य की वो मशाल बनो, जो अन्तहीन धुंध में जीवन को तलाशते-भटकते, खुद ही खो चुके मानव को अनमोल जिन्दगी का मूल्य बताकर मानवता से एक कदम ऊपर देव बनने की प्रक्रिया दिखा दे। जो लक्ष्य विमुख हो, भाग्य के दरवाजे खोलते-खोलते और ही तकदीर को ताला लगा रहे हैं, उन्हें सत्य की रोशनी द्वारा सौभाग्य की पगड़ी पहना दो। आप सत्य का वो पथ बनो कि जो अस्तित्व विहीन शख्शियत हो चले हैं उन्हें मुकम्मल जहाँ दिखा दो। आप सत्य की जागती ज्योति बनो, झूठे रैपरों में लिपटे सम्बन्धों का आवरण हटा वास्तविक आत्मिक संबन्धों की परिभाषा समझा सुख की छटा बिखेर दो। विषयों के सागर में, भोग विलास की रसनाओं की हकीकत दिखा कर, कलह-क्लेश से निकाल कर, परमात्मा पिता के सानिध्य एवं मिलन के आनन्द का पथ दिखाने वाले लाइट हाउस बनो। आप सत्य का ऐसा आइना बनो जो मुखौटों में छिपे सत्य स्वरूप का अक्स दिखा दे। सत्य के सिद्धान्तों पर सफलता के स्वर्णिम हस्ताक्षर कर, समय के शिलापट पर जीवन को अविनाशी खुशियों का महोत्सव बना दो। इसलिए उठो, मेरे भाई, आप सत्य के सिपहसालार बन, झूठ की लंका ध्वस्त करो। सत्य स्वरूप और सत्य पिता के साथ से तुम्हारी कभी असफलता हो ही नहीं सकती। सत्य, परमात्मा की प्रापर्टी है, इसे बार-बार प्रयोग करके आप अपनी शक्ति बना सकते हैं। सत्य पर तो जगतनियन्ता भी राजी एवं स्वमान का सिर भी शान से गौरवान्वित रहता है। सत्य स्वयं सिद्ध है, उसे किसी की उदारता की जरूरत नहीं पड़ती है। इसलिए आप सत्य के प्रतिनिधि बनो।

कर्मों का गणित

धन के हिसाब व कर्मों के गणित में भारी फर्क है। धन में दो और दो हमेशा चार ही होते हैं परन्तु कर्मों का गणित थोड़ा भिन्न है। यह समय, परिस्थिति एवं मनोस्थिति के आधार से ही लागू होता है। जो कर्म हम करते हैं वे हमारे भविष्य के बैंक में जमा होते ही जाते हैं, पर उन पर ब्याज अलग-अलग लगता है और फल भी अलग-अलग मिलता है। आज गणित सिर्फ धन तक सीमित रह गया है, जिससे जीवन का गणित ही बिगड़ गया है। कर्मों का गणित कभी फेल नहीं होता, पर अगर यह समझ में नहीं आया तो घाटे में ही जाते रहेंगे इसलिए कर्मों का गणित ठीक से समझने की अति आवश्यकता है। एक बीज गोभी का होता है जो सिर्फ एक ही फल देता है। बीज मटर-टमाटर आदि मौसमी फलों या सब्जियों के भी होते हैं, जो कई सारे फल देते हैं। बीज आम, सन्तरा या अमरूद आदि के भी होते हैं, जो अनेक वर्षों तक फल देते रहते हैं। ठीक इसी प्रकार, हमारे कर्मों के बीज भी फल देते हैं। आज जो समय चल रहा है उसमें कुछ ऐसे कर्म किये जा सकते हैं जो जन्म-जन्मान्तर के लिए जमा हो सकते हैं इसलिए कर्मों का गणित ठीक से समझने की आवश्यता है।

जीवन का चौराहा

आज जीवन सिर्फ चौराहों का ही रह गया है। जो आधारभूत मोड़ है, हम उसके अवलोकन की बात करना चाह रहे हैं। जो मुख्य चौराहा है अगर यहाँ निर्णय सही नहीं लिया गया तो जिन्दगी की दिशा बदल सकती

है। जीवन-यात्रा जैसे ही शुरू हुई, माँ-बाप ने जो दिशा पकड़ायी, लम्बे काल तक उनकी ही निगरानी एवं दिशा निर्देशन में जिन्दगी की गाड़ी चलती गयी। हाँ, किशोरावस्था तक आते-आते धीरे-धीरे परिवर्तन करते-करते दूसरे चौराहे पर आ पहुँचे, जहाँ कर्म-अर्थ-सम्बन्ध और समाज ये चार रास्ते मिलते हैं। यहाँ हर रास्ता अनिवार्य एवं आकर्षक लगता है। इन पर थोड़ी देर चलने पर सिर्फ चौराहे ही चौराहे नजर आने लगते हैं। इससे चकाचौंध के चकमे में फँस कर जीवन का दम घुटने लगता है। इसलिए मेरे भाई, चौराहों की जीवन में, परमात्म श्रीमत का कम्पास सदा साथ हो तो जीवन की गाड़ी सही दिशा पर चलती जायेगी। जीवन की गाड़ी को संयम-नियम के मार्ग पर चला कर सफलता की नई मंजिलों को पा लो। छद्म वेष में, छल-कपट की अभिलाषा से मनमोहक रूप में विचरने वालों का कोई भी मनोरथ तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक आपका तीसरा नेत्र स्वच्छ है, उसमें मोह का मोतियाबिन्द नहीं है। जब तक आपकी जबान में, स्वाद से आगे प्रसाद ही ग्राह्य होता रहेगा, जब तक आपकी भावनाओं में निर्मलतम् भाव की पराकाष्ठा लिए पवित्रतम् प्रेम की परिकल्पना कायम रहेगी, जब तक आपकी वाणी के तरकश में शान्ति के तीर सुरक्षित हैं, जब तक आपके माथे पर नम्रता का चन्दन लगा हुआ है, तब तक कोई चौराहा बिना मंजिल के आपको चकमा दे नहीं सकता। इसलिए मेरे भाई, उठो और भागीरथ बन भारत का भाग्य उठाओ पर अटेन्शन प्लीज। ■■■

दिव्य ज्ञान का मधुर फल

ब्र.कु. बलवीर भाई एडवोकेट, आगरा

परमपिता परमात्मा शिव बाबा का बच्चा बनते ही मुझे दिन-प्रतिदिन दिव्य अनुभूतियाँ होने लगी। बाबा का ज्ञान लौकिक बेटी नीरू व दामाद मुकेश जी के माध्यम से प्राप्त हुआ। ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स करते ही लौकिक परिवार में सभी को निश्चय हो गया कि पुरानी दुनिया के स्थान पर नई सतयुगी दुनिया की स्थापना हेतु, नर से श्रीनारायण व नारी से श्रीलक्ष्मी बनाने का कार्य शिव बाबा प्यारे ब्रह्मा बाबा द्वारा करा रहे हैं।

युगल सहित दोनों पुत्र व पुत्रियाँ शीघ्र ही ज्ञान-मार्ग में आ गये और पूरा परिवार ज्ञान में चलने लगा। सन् 2002 में लौकिक घर पर बाबा की गीता पाठशाला नियमित रूप से प्रारम्भ हो गई। इससे परिवार के सभी सदस्यों को और भी पूर्ण निश्चय हो गया कि नई सृष्टि की स्थापना का कार्य स्वयं परमपिता परमात्मा इस धरा पर अवतरित होकर कर रहे हैं।

उन्हीं दिनों मैंने सरकारी वकील हेतु आवेदन किया था। ज़िले के अन्य लोग भी सरकारी अधिवक्ता के पद पर नियुक्ति प्राप्त करने के लिए भरसक प्रयास कर रहे थे। मैं दिनांक 2 अगस्त, 2005 को माउण्ट आबू आ गया। मधुबन की पावन भूमि पर आने का सौभाग्य मुझे तीसरी बार प्राप्त हुआ था। माउण्ट आबू से वापिस आगरा पहुँचने से पहले ही नियुक्ति-पत्र मेरे लौकिक घर पर पहुँच चुका था। माउण्ट आबू से आगरा आते हुए रास्ते में ही मुझे लगातार परिचितों द्वारा बधाइयों पर बधाइयाँ मिलती जा रही थीं। साथ ही पता चला कि स्थानीय समाचार-पत्रों में भी मेरी इस नियुक्ति के बारे में प्रकाशन हो चुका है। यह सुन मेरी ख़ुशी की सीमा ही न रही। प्यारे बाबा का इतना प्यार देखकर मेरी आँखें छलक आईं और मैंने मन-ही-मन प्यारे शिव बाबा का शुक्रिया अदा किया।

हमारा पूरा परिवार मधुबन आकर, ज्ञान-रत्नों से झोली भर कर अब अन्य आत्माओं का कल्याण करने की सेवा में तत्पर है। परिवार के सभी सदस्य बाबा की दुआ-आशीर्वाद व वरदानों से दिन दूनी और रात चौगुनी प्रगति कर आगे बढ़ रहे हैं। छोटा पुत्र मोहित राजयोग अभ्यास से उदाहरणमूर्त बन चुका है। बड़ा पुत्र रोहित भी एडवोकेट है। वो भी अपने साथी अधिवक्ताओं के मध्य बाबा के ज्ञान का परिचय देने व अनेक आत्माओं को ज्ञान-योग के अनुभव कराने का माध्यम बना हुआ है। उसकी युगल भी बचपन से बाबा के ज्ञान में है तथा दोनों ही घर-गृहस्थ में रह, कमल-फूल समान पवित्र जीवन व्यतीत कर रहे हैं। दिल से बार-बार निकलता है – मीठे बाबा, प्यारे बाबा, दिल कहे तेरा शुक्रिया!

मानी और माखन का वो स्वाद!

■■■ ब्रह्माकुमारी मीरा बहन, सान्ताक्रुज (मुम्बई)

मेरा जन्म सन् 1947 में मुम्बई (अन्धेरी) में एक जैन व्यापारिक परिवार में हुआ। मैंने मुम्बई यूनिवर्सिटी में बी.काम.(B.Com.) करने के बाद CAIIB (Banking Examination) पास किया।

एक ही विषय पर स्पष्ट और सरल उद्‌बोधन

जैन परिवार के नियमों के अनुसार मैंने बाल्यकाल से उपवास किये थे। जैन साधु-साध्वियाँ, जिन्हें हम महाराज साहब और महासती जी कहते थे, के पास छुट्टियों में मैं जाती थी, उनकी किताबें भी पढ़ती थी। स्वामी रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद की किताबें भी पढ़ती थी। इस प्रकार थोड़ी-थोड़ी आध्यात्मिक जागृति बाल्यकाल से ही थी। सन् 1963 में मार्च के पहले सप्ताह में डॉ.निर्मला दीदी ने मुझे कहा कि यहाँ कोलाबा में मातेश्वरी जगदम्बा पधारी हैं, आप भी चलो। मैं लौकिक माताजी के साथ वहाँ गई और मातेश्वरी जी को देखकर बहुत ही अभिभूत हो गई। मन में ऐसा आया कि इन्हें देखती ही रहूँ। उनका व्यक्तित्व बहुत आकर्षक था। उनका बोलना भी मुझे बहुत अच्छा लगा। मुझ पर इस बात का विशेष प्रभाव पड़ा कि मातेश्वरी एकदम हर्षित चेहरे से, एक ही पोजिशन में बैठकर, एक ही विषय का विस्तार करते हुए कितनी सरलता और स्पष्टता से बोल रही हैं। मुझे उनकी बातें बहुत सुहाई (अपील की)।

कौन-सी मीरा हो?

जितने दिन मम्मा मुम्बई में रही, मैं रोज उनका प्रवचन सुनने जाती रही। एक दिन उन्होंने मुझे बुलाया और पूछा, तुम्हारा नाम क्या है? मैंने अपना नाम बताया। मम्मा ने तुरन्त पूछा, तुम कौन-सी मीरा हो। तुम पीताम्बर वाले की मीरा हो या कोट और टाई वाले की मीरा हो? रोज प्रवचन सुनते-सुनते मुझे कुछ ज्ञान समझ में आ गया था इसलिए मैंने जवाब दिया, मैं पीताम्बर वाले की मीरा हूँ। मम्मा के साथ इस मिलन की मुझ पर अमिट छाप लग गई। मुझे अन्दर ही अन्दर इतना आकर्षण होता कि बस मम्मा की वाणी सुनती ही रहूँ, उन्हें ही देखती रहूँ।

मन में छप गई उनकी छवि

घर से डेढ़ घन्टे की दूरी पर स्थित कोलाबा, वाटरलू मेन्शन में स्थित सेवाकेन्द्र पर जब मैं कार या ट्रेन से जाती थी तो अन्दर ही अन्दर मम्मा को ही याद करती थी। उनकी छवि मेरे मन में छप गई थी। प्रवचन सुनकर रात्रि को दस बजे घर पहुँचती थी। जो उनसे सुनती थी उस पर मनन-चिन्तन भी करती थी। इस प्रकार सुनते-सुनते मेरी आध्यात्मिक जिज्ञासा और जागृति और आगे बढ़ गई तथा ज्ञान-मार्ग में और आगे चलने के लिए मुझे बहुत बल मिला।

ज्ञान के कोर्स द्वारा जानी नई-नई बातें

उस समय सेवाकेन्द्र पर निर्मलशान्ता दादी तथा पुष्पशान्ता दादी थी। उन्होंने मुझे ज्ञान का साप्ताहिक कोर्स करवाया। कोर्स बहुत अच्छा लगा, ज्ञान की कई नई-नई बातें सीखने को मिली। वैसे तो जैन धर्म की आत्मसिद्धि की किताबें मैं पढ़ती थी इस कारण आत्मा के बारे में कुछ ज्ञान था परन्तु अन्य नई-नई बातें भी जानी, जो बहुत अच्छी लगी। योग तथा पवित्रता की धारणा की बात बहुत मन को भाई।

मुखमण्डल की आभा और नयनों का तेज

इसके बाद बाबा से मिलने माउण्ट आबू जाना हुआ। मुम्बई से आबू तक रास्ते में मुझे यही विचार आते रहे कि कैसे होंगे बाबा, कैसा होगा आबू आदि-आदि। मन में बहुत उमंग-उत्साह और खुशी थी कि जल्दी पहुँचे, जल्दी मिलें। जब हम पाण्डव भवन पहुँचे, बाबा से मिले, उनकी दृष्टि ली तो भावविभोर हो गई। बाबा के मुखमण्डल पर जो आभा देखी, नयनों में जो तेज देखा, प्रकाश देखा, वो अद्‌भुत, अलौकिक और अनमोल था। वे क्षण मेरे जीवन के अविस्मरणीय क्षण थे, मैं गद्‌गद् हो गई और सोचने लगी, ऐसे व्यक्ति को, ऐसी हस्ती को, ऐसे व्यक्तित्व को मैंने आज तक नहीं देखा। तब मैं 15 वर्ष की थी।

आया बाबा का बुलावा

रात्रि आठ बजे एक दादी जी मेरे कमरे में आए और कहा, बाबा आपको बुला रहे हैं। मेरी खुशी और भी बढ़ गई कि प्यारे बाबा ने मुझे बुलाया है। यह जिज्ञासा भी हुई कि किसलिए बुलाया होगा। जैसे ही बाबा के कमरे के दरवाजे पर पहुँची, बाबा ने मुझे देखा और कहा, आओ बच्ची। मैं अन्दर गई, देखा कि कोने में एक कोयले की अंगिठी जल रही है और उस पर गरम-गरम मानी (गोलगप्पे के आकार की छोटी रोटी) बन रही है। एक मानी में मक्खन और बूरा (चीनी) लगाकर बाबा ने अपने हाथ से मुझे खिलाई। बाबा की दृष्टि लेते हुए मैंने वो मानी खाई तो जो स्वाद आया उसे कभी नहीं भूल सकती हूँ। मैं पदमापदम भाग्यशाली अपने को समझती हूँ जो मैंने इतनी बड़ी हस्ती के हाथों से गिट्टी खाई।

हार में भी प्रचण्ड जीत

एक बार बाबा ने मुझे अपने साथ बेडमिंटन खेलने के लिए बुलाया। खेल में मेरी हार हो गई। बाबा ने कहा, आओ बच्ची, जिसकी हार होती है उसे डबल टोली मिलती है। मुझे तो और ही खुशी हो गई कि बाबा के हाथ से डबल टोली मिल रही है। इस हार में भी हमारी प्रचण्ड जीत है।

बाबा के अंग-संग अनुभव होता था कि बाबा बहुत रायल और सिम्पल हैं। बाबा श्वेतवस्त्रधारी हैं, बाबा के कर्म भी श्वेत हैं, बाबा का कर्त्तव्य भी श्वेत है, बाबा का सब कुछ श्वेत है। सन् 1975 से मैं सान्ताक्रुज (मुम्बई) सेवाकेन्द्र की सेवा के निमित्त हूँ। भारत से बाहर अनेक देशों में जैसे कि यूरोप, यू.एस.ए., कैनेडा, आस्ट्रेलिया, मलेशिया, दुबई, सिंगापुर, रशिया, अफ्रीका, न्यूजीलैण्ड, फीजी, श्रीलंका, थाइलेन्ड आदि में भी ईश्वरीय सेवार्थ जाना हुआ है।

शिपिंग, एविएशन तथा टूरीज्म प्रभाग की वाइस चेअरपर्सन के रूप में भी मैं अपनी सेवाएँ दे रही हूँ। इसके अतिरिक्त वाटुमल सेनेटोरियम ट्रस्ट की ट्रस्टी के रूप में तथा मुंबई स्थित बी.एस.ई.एस., एम.जी.हॉस्पिटल, जो ब्रह्माकुमारीज द्वारा संचालित है, में एडवाइजरी कमेटी के मेम्बर के रूप से सेवाएँ दे रही हूँ। ■■■

बाबा बना देता है हर मुश्किल आसान

■■■ ब्रह्माकुमारी प्रफुल्ला, अकोला (महाराष्ट्र)

मुझे सन् 2004 में मेजर हार्ट अटैक आया। मैं आबू रोड-शांतिवन के हृदय शिविर में शामिल हुई और बिना बायपास सर्जरी के मेरी चार नालियों की ब्लॉकेज जो कि 15%, 70%, 60% और 30% थी, खुल गई। सन् 2008 में कैंसर के कारण ऑपरेशन करवाना पड़ा। सन् 2013 में दोबारा कैंसर हुआ। कहा गया था कि कीमो के वक्त मुँह में छाले आएँगे, कै होगी, लूज मोशन होगा लेकिन मुझे इनमें से कोई भी तकलीफ नहीं हुई। आश्चर्य की बात यह है कि जब कीमो चल रहा था, तब भी मैं घर का सारा काम कर लेती थी। घर पर गीता पाठशाला चालू है। सात दिन का कोर्स, मुरली पढ़ना – अपनी शक्ति देकर सब बाबा करवा लेता था। मैं कीमो लेने जाती थी तो डॉक्टर साहब कहते थे कि आप तो कीमो लेने हँसते हुए आती हो और हँसते हुये जाती हो। मैंने कहा, मेरा नाम ही प्रफुल्ला है इसलिए प्रफुल्लित रहती हूँ। डॉ. साहब बोले, मेरे पास तो राम और कृष्ण नाम वाले भी रोते हुए आते हैं और रोते हुए जाते हैं। मैंने कहा, मेरी खुशी का राज़ है। तब उन्होंने कहा, बताइए, क्या राज़ है? मैंने कहा, कीमो हो जाने पर शाम को बताऊँगी। शाम को डॉक्टर साहब के केबिन में गई तो बोले, मैं आपका ही इंतजार कर रहा हूँ, अपनी खुशी का राज़ बताइये। तब मैंने अपना अनुभव सुनाया कि कैसे राजयोग से बिना बायपास कराए ब्लॉकेज निल हो गई। शिवबाबा का सत्य परिचय उन्हें दिया। ज्ञान की कुछ बातें सुनाई। उन्हें अच्छा लगा तो विस्तार से सब जानकारी ली और कहने लगे कि मैं अपनी पत्नी को लेकर सात दिन का कोर्स करने आऊँगा। उस दिन आप भी सेवाकेन्द्र पर रहना।

डॉक्टर साहब को ज्ञानामृत पत्रिका और साहित्य दे आती थी। वे इतने प्रभावित हुए कि मैं जब भी चेकअप के लिए जाती हूँ तो फीस नहीं लेते हैं। मैंने कहा, आप फीस नहीं लेते तो हमें अच्छा नहीं लगता है। उन्होंने कहा, आप के साथ बातें करना हमें बहुत अच्छा लगता है।

बाबा की इतनी मदद मिलती है कि हर समस्या सरल और सहज पार हो जाती है। हर मुश्किल आसान बना देता है बाबा। बाबा पर पूरा निश्चय रखने से बाबा सब कुछ संभालता है। मैंने कैंसर के वक्त बाबा को कहा था, मुझे मात-पिता, सास-ससुर, जेठ-जेठानी, देवर, बड़ा भाई या बड़ी बहन, बच्चे आदि नहीं हैं। आपको ही मुझे संभालना है तो बाबा ने ऐसा संभाला कि कोई दर्द ही नहीं हुआ। दुख:हर्ता-सुखकर्ता बाबा है इसलिए सारे दुख हर लेता है। मैं सदा ही खुश रहती हूँ और खुशी बाँटती हूँ। ■■■

साकार मिलन की सुखदाई यादें

ब्रह्माकुमारी वीरबाला, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

साकार बापदादा से प्रत्यक्ष मिलन की अनंत सुखदाई यादें, मेरे जीवन की अविस्मरणीय यादों में हैं। वे यादें सहज ही फरिश्तों की आकारी दुनिया में ले जाती हैं, जहां बाबा है, मम्मा है तथा कई दैवी गुण संपन्न आत्मायें हैं। स्थूल आँखों से देखे गए वे अलौकिक दृश्य बुद्धि रूपी तिजोरी में बंद हैं और आज भी ताज़गी देते रहते हैं।

'वीरबाला' नहीं, 'महावीर बाला'

प्रजापिता ब्रह्मा के साकार तन में आये निराकार परमपिता परमात्मा से प्रत्यक्ष में मिलने की खुशी में लखनऊ से माउंट आबू तक का सफर कैसे कट गया, पता ही नहीं चला। सन् 1958 में पहली बार बापदादा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मधुबन पहुँचकर सबसे पहले बाबा से मिलने उनके कमरे में गए। बाबा संदली पर योगमुद्रा में बैठे थे। हम भी चुपचाप योग में बैठ गए। बाबा से दृष्टि मिलते ही बड़े अलौकिक अनुभव हुए। आत्मा अशरीरी होकर शान्ति और सुख का अनुभव करने लगी। थोड़े समय बाद ऐसा प्रतीत हुआ कि बाबा अंतरात्मा में लाइट डालकर मुझ आत्मा के संस्कार और कर्मों का खाता देख रहे हैं। परमात्मा की कल्याणकारी दृष्टि की महिमा सुनी थी, ''नजर से निहाल कींदा स्वामी सतगुरु।'' बाबा से मिलकर उसका प्रैक्टिकल अनुभव किया। फिर बाबा ने पूछा, किससे मिलने आई हो बच्ची? क्या पहली बार मिल रही हो? मैंने कहा, बापदादा से मिलने आई हूँ बाबा, जिनसे मैं कल्प-कल्प मिलती रहती हूँ। फिर टीचर बहनों ने मेरा लौकिक परिचय दिया। बाबा ने कहा, 'वीरबाला' नहीं, 'महावीर बाला' बन प्रवृत्ति मार्ग में रहते, विहंग मार्ग की सर्विस करनी है। बड़े माइक तैयार करने हैं, बड़े लोगों की आवाज दूर तक फैलती है। तुम राजभवन में रहती हो। उत्तर प्रदेश के गवर्नर से संपर्क रहता है। युक्ति से गवर्नर तथा मंत्रीगण आदि की सेवा करनी है। मेरे युगल राजेश्वर जी, यूपी गवर्नर के पर्सनल स्टाफ में पदासीन थे। वे 1955 में बाबा से मधुबन में गोद ले निश्चय बुद्धि बन ज्ञान में चल रहे थे। परिचय के बाद बाबा ने गोद में बिठाकर ज्ञान की लोरी दी तथा स्थूल टोली से मुँह मीठा कराया।

निराकार-साकार मिलन की सुन्दरता

कितना सुख था बापदादा और मीठी परन्तु गुप्त माँ की गोदी में! परमात्मा जो सदैव हमारी भक्ति में रहे, कथाओं में रहे, कल्पनाओं में रहे, उन्हीं से आज मिल रहे हैं। अपने को ही आश्चर्य हो रहा था, फिर दुनिया के लोगों की क्या बात कहें! निराकार परमात्मा का कोई चित्र नहीं है परन्तु जब वे ब्रह्मा तन में चित्र रूप में धरती पर अवतरित होते हैं तो साकार तनधारी आत्मायें दिव्य बुद्धि द्वारा उनकी उपस्थिति का अनुभव कर सकती हैं। निराकार-साकार मिलन की सुन्दरता का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। बिंदु रूप परमात्मा ज्ञान, प्रेम, शांति, सुख और आनंद के सागर हैं। सर्वशक्तिमान हैं। पतित पावन हैं। उनके असीम गुण व शक्तियों का अनुभव व अनुभूति जीवात्माओं को तब होती है, जब वे साधारण मनुष्य तन (ब्रह्मा तन) में अवतरित हो युग परिवर्तन तथा सत्धर्म की स्थापना का कार्य करते हैं।

बाबा संग झूलने का अवर्णनीय आनन्द

पहली बार जब हम मधुबन गए, उस समय हिस्ट्री हॉल वगैरह कुछ नहीं बना था। भवन में गिने-चुने कमरे थे जिनमें बाबा, मम्मा, टीचर बहनें तथा पार्टी में आई हुई मातायें ठहरती थीं। भाइयों के लिए बगिया में टेंट लग जाते थे। पार्टी में 30-35 सदस्य होते थे। छोटी जगह में साथ रहने का सबसे बड़ा लाभ यह था कि हर समय बाबा के दर्शन होते रहते। बाबा जिधर जाते, हम सब भी उनके साथ चल पड़ते। प्रात: क्लास समाप्त होने के बाद यदि बाबा-मम्मा टहलने जाते तो हम भी उनके साथ हो जाते। चलने में बाबा बहुत तेज थे, हम सब पीछे रह जाते और बाबा आगे निकल जाते। बाबा हमेशा लकड़ी की खड़ाऊँ (पादुका) पहनते थे। फरिश्तों जैसी चाल थी बाबा की। चलने की जरा भी आहट नहीं होती थी। बाबा के स्वभाव

में तो बच्चों जैसी सरलता एवं निश्छलता थी ही, उनके शरीर में भी बच्चों जैसा लचीलापन था। बाबा इतनी बड़ी आयु में भी तख्त या संदली पर जब योगमुद्रा में बैठते तो विशेष मुद्रा यानी टाँग पर टाँग चढ़ा कर बैठते थे, जो आसान नहीं है। बाबा सदैव बच्चा, बच्ची कह संबोधित करते थे। बच्चों के साथ खेलते-खिलाते, हँसाते और कभी झूला झुलाते। हरे वृक्ष की मोटी डाल पर रंगीन रस्सी से डाले गए उस झूले पर बाबा के साथ बैठकर झूला झूलने का आनन्द अवर्णनीय है।

कर्मठ और अथक

अकेले बाबा में ही उनके कई रूप देखने में आते थे। वे युवाओं की तरह कर्मठ और अथक थे। सदैव मनसा, वाचा, कर्मणा किसी न किसी कार्य में लगे रहते। चेहरे पर उमंग-उत्साह और ताज़गी की ऐसी झलक रहती थी जिसका देखने वाले पर भी प्रभाव पड़ता और वह भी मुस्कराना सीख लेता। बुजुर्ग तो बाबा थे ही, यज्ञ को संवारने की पूरी जिम्मेदारी बाबा की थी। नए-नए सेंटर खुल रहे थे। उन सब पर भी बाबा का ध्यान बना रहता।

मुरली माधुर्य

मधुबन जाने का प्रमुख उद्देश्य था, बापदादा के श्रीमुख से सम्मुख मुरली सुनना। मुरली वह ज्ञान की तान है जिसके द्वारा परमपिता जीवात्माओं का आह्वान करते हैं तथा जीवात्मायें निराकार सो साकार में आये परमात्मा को पहचानती हैं। प्रातः 4:00 बजे ''जाग सजनिया जाग'' का रिकॉर्ड बजता। भाई-बहनें 4:00 बजे से ही तैयार होकर बाबा के कमरे में जाना शुरू कर देते। बाबा पहले से ही योग में बैठे होते। धीरे-धीरे क्लास का समय भी हो जाता। फिर गीत बजता। पहले माँ सरस्वती की ज्ञान मुरली चलती फिर एक और गीत बजने के बाद बाबा के महावाक्य शुरू हो जाते। ब्रह्मा मुख पर अलौकिक चमक आ जाती। हॉल में पूर्ण शांति छा जाती। उस विचित्र को चित्र रूप (ब्रह्मा तन) में देखकर आत्मा मोहित हो जाती। आँखें साकार रूप में आए परमात्मा का रूप-रसपान करने लगतीं, कान उनके महावाक्य सुनने में मगन हो जाते। बुद्धि अपनी तिजोरी में उन ज्ञान के अमूल्य रत्नों को भर लेती और मन मयूर खुशी में नाचने लगता। उस सुख का वर्णन करना असंभव है। उस सुख के सामने स्वर्ग के सुख भी फीके हैं। मुरली चलाते समय बाबा बच्चे, बच्ची कह कर संबोधित करते रहते और हम सचमुच अपने को बच्चा अनुभव करने लगते।

गुरुकुल प्रणाली की अनुभूति

पौराणिक ग्रंथों में गुरुकुल प्रणाली की कथायें पढ़ी थीं। पहले जब मैं मधुबन आई तो लगा जैसे मैं गुरुकुल में आई हूँ, जहां शिक्षा देने वाला सतगुरु है। प्यार से सब को संवारने वाली गुरु माँ है। शिव बाबा द्वारा स्थापित किया हुआ रुद्र ज्ञान यज्ञ है। यज्ञ का ध्यान रखने वाली तपस्विनी मातायें-बहनें हैं, राजऋषि भाई हैं। जहाँ के आध्यात्मिक वातावरण में ईश्वरीय ज्ञान के शब्द गूंजते हैं और जहाँ के खुले आँगन में हरे-भरे पेड़-पौधों तथा रंग-बिरंगे फूलों से सजी-धजी प्रकृति अपनी शोभा बिखेरती है। वास्तव में मधुबन सच्चा गुरुकुल है, जहाँ स्वयं सद्गुरु परमात्मा ने ब्राह्मण कुल की स्थापना की है। ऊँच-नीच, गरीब-अमीर, जाति-धर्म आदि के भेदभाव से रहित विश्व की समस्त जीव आत्माओं के लिए यह गुरुकुल खुला रहता है जहाँ सब मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई पढ़ते हैं। ब्रह्मा बाबा ने सबको सच्चाई, सफाई और स्वावलंबन की शिक्षा देकर परिश्रमी बनाया ताकि वे अपनी तथा यज्ञ की सेवा कर सकें। अन्य गुरुकुलों की तरह सतगुरुकुल में भी गऊएँ थीं और हैं। ब्रह्मा बाबा अपनी गऊओं को बहुत प्यार करते थे।

करन-करावनहार बाबा

गुणों के पारखी, करन-करावनहार बाबा, बच्चों को उठाते, आगे बढ़ाते तथा निमित्त बनाकर कार्य संपादित कराते, इसके कितने अनुभव बाबा ने कराए! सन् 1960 की बात है, उत्तर प्रदेश के हापुड़ जिले में विरोधी तत्वों ने ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र की निमित्त बहनों और आने वाले भाई-बहनों के विरुद्ध हंगामा खड़ा कर दिया। इस घटना से संबंधित बाबा का पत्र और मम्मा का बड़ा-सा टेलीग्राम हमारे पास आया। बाबा ने हमें आदेश दिया था कि हम राज्यपाल जी को यह पत्र सुनायें और हापुड़ सेवाकेन्द्र पर जल्दी से जल्दी परेशानी दूर करने की प्रार्थना करें। लौकिक युगल राजेश्वर जी राज्यपाल कार्यालय में कार्यरत थे इसलिए हमें उन से मिलने की अनुमति मिल गई। गवर्नर बड़ी हस्ती है, उससे

मिलने में मैं नर्वस हो रही थी। देहाभिमान आ रहा था। बाबा को याद किया, अंतर्मन से आवाज आई, बाबा का कार्य, शक्ति स्वरूप होकर करना है। हम दोनों राज्यपाल से मिले, उन्हें घटना की सही जानकारी दी क्योंकि अखबारों ने हापुड़ की घटना के उल्टे-सीधे समाचार छाप दिये थे। फिर बाबा-मम्मा से प्राप्त पत्र व टेलीग्राम उन्हें पढ़ने को दिए। इन पत्रों का राज्यपाल पर बड़ा प्रभाव पड़ा। कहने लगे, मुझे दुख है कि यूपी की इस घटना का प्रभाव राजस्थान तक पहुँचा है। मैं होम मिनिस्टर को कहता हूँ कि वे स्वयं हापुड़ जाकर इस केस का निरीक्षण करें। बाद में पता चला कि होम मिनिस्टर हापुड़ गए, केस को सुलझाया, फिर सब नॉर्मल हो गया।

जीवन में लाली भर देने वाले बाबा के लाल पत्र

पेंसिल से लिखे बाबा के पत्र बराबर आते रहते थे। बाबा पत्रों द्वारा सर्विस के संकेत देते तथा उपाय बताते रहते थे। हमें विश्वास था कि भविष्यद्रष्टा बाबा जिस कार्य का इशारा दे रहे हैं, वह हुआ ही पड़ा है। हमें निमित्त मात्र परन्तु तत्परतापूर्वक कार्य में लगे रहना है ताकि सर्विस में हमारी बुद्धि बिजी रहे तथा जो विशेषता व गुण हमारी अंतरात्मा में छिपे हैं, वे बाहर आयें और उनका विकास हो। सर्विस करने से आत्मा शक्तिशाली बनती है तथा खुशी का पारा चढ़ता है।

राजभवन में एक सप्ताह की चित्र प्रदर्शनी

सन् 1962 में विश्वनाथ दास जी यू.पी. के गवर्नर बनकर आए। वे सात्विक विचारों वाले धार्मिक व्यक्ति थे। महात्मा गांधी के साथ उनके आश्रम में रह चुके थे। पद संभालने के बाद राज्यपाल एक बार स्टाफ और उनकी फैमिली से मिलते हैं, पूरी जानकारी के लिए। मेरा परिचय ब्रह्माकुमारीज के प्रतिनिधि के रूप में दिया जाता था क्योंकि रहन-सहन, आचार-विचार, खान-पान सबसे भिन्न थे। जब मैं व्यक्तिगत रूप से समय लेकर राज्यपाल जी से मिलने गई तब वे बड़ी प्रसन्नतापूर्वक मिले। हमारे आध्यात्मिक जीवन की जानकारी उन्हें स्टाफ के अन्य लोगों द्वारा मिल चुकी थी। कहने लगे, बेटी इतनी शिक्षित होने के बाद इतनी सादगी तथा इतनी छोटी उम्र में त्यागी जीवन अपनाना, बड़ी बात है। फिर तो यूपी के कई शहरों में सेंटर पर मेले व प्रदर्शनी में उनको ले गए। अपने प्रोग्रामों में वी.आई.पी. के आने का रास्ता खुल गया। सर्विस जैसी भी हो रही थी, ब्रह्मा बाबा उससे संतुष्ट तो थे परन्तु वे विहंग मार्ग की सर्विस चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि राजभवन के अंदर चित्र-प्रदर्शनी हो ताकि मंत्रीगण और सरकारी पदाधिकारियों तक ज्ञान की आवाज पहुँचे। मुझे पक्का निश्चय था कि बाबा भविष्यद्रष्टा भी हैं और भविष्यवक्ता भी हैं। जो बाबा ने कहा है, वह हुआ ही पड़ा है। हमें तो निमित्त मात्र उस अनुसार कार्य करना है। राज्यपाल को यू.पी. आए तीन वर्ष हो गए थे। वे हमारे ज्ञान को अच्छी रीति समझने लगे थे। अगली बार जब मैं उनसे मिली तो उनसे राजभवन ग्राउंड में प्रदर्शनी रखने की अनुमति माँगी और उन्होंने उसकी स्वीकृति दे दी। मैंने बाबा को प्रदर्शनी रखने की निश्चित तारीख तथा उससे संबंधित सब जरूरी बातें लिखकर भेज दी। बाबा ने सभी बड़ी बहनों और भाइयों को ढेर सारे नए-नए चित्र और सामान सहित लखनऊ भेज दिया। प्रदर्शनी की तैयारी शुरू हो गई। यह अक्टूबर, 1965 की बात है। प्रदर्शनी बहुत सुंदर एवं आकषर्क थी। इसकी शोभा देखते ही बनती थी। मंत्रीगण तथा सरकारी पदाधिकारी सभी ने यह प्रदर्शनी देखी। जनरल पब्लिक के आने का भी प्रबंध था। यह प्रदर्शनी एक सप्ताह तक चली। राजभवन जैसी सरकारी जगह पर इतना बड़ा सार्वजनिक कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हो जाने पर हम बच्चे भी खुश थे, बाबा भी खुश थे और राज्यपाल जी भी खुश थे। इस प्रदर्शनी को लेकर राज्यपाल जी से विधानसभा में प्रश्न भी किए गए। उत्तर में राज्यपाल जी ने कहा, श्रेष्ठ समाज की रचना करने वाले ऐसे आध्यात्मिक कार्यक्रमों के लिए राजभवन सबसे उत्तम स्थान है।

जिंदगी के लंबे समय के ज्ञान के अनुभव जब लिखने बैठो तो कलम रुकती ही नहीं, रोकनी पड़ती है। मेरे युगल राजेश्वर जी को सन् 1955 में एक पुस्तक द्वारा ज्ञान का परिचय मिला था। उसी वर्ष वे माउन्ट आबू गये। एक सप्ताह वहाँ रहे। बापदादा की गोद ली और पक्के निश्चय बुद्धि होकर लौटे। फिर मुझे भी उसी रास्ते पर चलने की प्रेरणा दी। वे मेरे साथी, सहयोगी और मार्गदर्शक के साथ-साथ ईश्वरीय सर्विस में बड़े सहायक थे। ■■■

प्यारे बाबा ने मेरी छठी मनाई

ब्रह्माकुमारी चन्द्रकला, जयपुर

मेरा जन्म सन् 1962 में एक सम्पन्न सिंधी परिवार में हुआ। जब मेरी आयु मात्र डेढ़ वर्ष थी, तब माता-पिता ईश्वरीय ज्ञान के सम्पर्क में आये। तब पिताजी जयपुर, किशनपोल बाजार में लगी एक चित्र-प्रदर्शनी देखने अपने मित्र के साथ आये थे। मुझे भी साथ लाये थे। मुझे प्रदर्शनी के वे चित्र बहुत अच्छे लगे थे। उस दिन के बाद मैंने प्रति दिन पिताजी को कहना शुरू कर दिया कि मैं आपके साथ वहाँ (चित्र-प्रदर्शनी वाले स्थान) पर चलूँगी। वे मुझे लेकर रोज ब्रह्माकुमारीज़ सेन्टर जाने लगे। किसी दिन नहीं जाते थे तो मुझे रोना आ जाता था। पिताजी मेरा रोना देख नहीं पाते थे इस कारण प्रतिदिन सेन्टर जाने लगे।

बाबा ने दिया मुझे नाम

ढाई वर्ष की आयु में मैं पहली बार उनके साथ माउण्ट आबू गई। प्यारे ब्रह्मा बाबा ने मुझे देखते ही कहा – इस बच्ची का हम पुनः नामकरण-संस्कार करेंगे, छठी मनायेंगे, जो इसे नाम मिला हुआ है, वो इसके उपयुक्त नहीं है। प्यारे बाबा ने एक बड़ा आयोजन किया, पुनः मेरी छठी मनाई गई जिसमें मेरा नाम आलमाइटी बाबा से मंगवाया गया। दादी पुष्पशान्ता जी, बाबा के आदेश से भोग लगाने बैठी, बाबा ने उन्हें वतन में खींच लिया और वे ध्यान में आलमाइटी बाबा से मेरा नाम लेकर आईं। फिर ब्रह्मा बाबा ने यह 'चन्द्रकला' नाम मुझे दिया।

पगड़ी वाले बाबा

यह भी बड़े सौभाग्य की बात है कि नामकरण-संस्कार पाण्डव भवन के हिस्ट्री हॉल में हुआ। बाबा पगड़ी पहन कर वहाँ आये। मैं अपने पिताजी की गोद में बैठी हुई थी। बाबा को पगड़ी पहने मैं पहली बार देख रही थी इसलिए डर गई थी। बाबा ने मुझे गोद में लेने की कोशिश की परन्तु मैं जम्प लगाकर पिताजी की गोद में चली गई। बाबा के पास नहीं गई। तब बाबा ने कहा – अच्छा बच्ची, तुम डर गई और फिर बाबा ने पगड़ी उतार दी।

बाबा से मिली फ्रॉक सौगात में

नागपुर की पुष्पा बहन (दिवंगत) ने भोग के रूमाल से मेरे लिए एक फ्रॉक सीली थी, वो मुझे पहनाई गई थी। तब बाबा ने मुझे दो और फ्रॉक भी गिफ्ट में दी थी। मैंने जिद्द पकड़ ली थी कि मुझे पहननी हैं तो यही दो फ्रॉक पहननी हैं, जो बाबा ने दी हैं। जब मैं यज्ञ में आई थी, तब मेरे में एक अलग-सा संस्कार था। मैं नित्य नई फ्रॉक पहनना चाहती थी। इस कारण मेरे पास काफी फ्रॉक थी। परन्तु बाबा से ये दो फ्रॉक पाने के बाद मैंने शेष सभी फ्रॉक त्याग दी, किसी को भी हाथ नहीं लगाया। इससे लौकिक माँ को थोड़ी-सी परेशानी हो गई और बाबा से कहने लगी – बाबा, इसको कहो, ये सब फ्रॉक देने वाले भी आप ही हो ताकि ये पहने। फ्रॉक धुले, फिर सूखे, तब तक क्या पहनायें मुझे, यह उनकी समस्या हो गई थी। मैंने भी बाबा को कह दिया, पहननी हैं तो ये दो फ्रॉक ही, अन्य कोई भी नहीं।

मधुबन के प्रांगण में बाल क्रिड़ाएँ

इसके बाद यज्ञ से मेरी पालना शुरू हो गई। वह दिन और आज का दिन, मैंने जो भी वस्त्र पहने हैं, वे यज्ञ से मिले हुए ही पहने हैं। माँ-बाप की दी हुई चीज़ें मैंने नहीं पहनी। दीदी मनमोहिनी जी से मेरा विशेष स्नेह था। वो जो कहती थीं, मैं मान लेती थी। वे 8-10 फ्रॉक एक ही बार बनवा कर सौगात के रूप में दे दिया करती थीं। ढाई-तीन साल की आयु में मैं बिना माता-पिता के अकेली ही बाबा के पास एक मास रहकर गई। बिदर की संतोष बहन (दिवंगत) को बाबा ने सेवा दी थी मुझे खिलाने-पिलाने और तैयार करने की। फिर जब स्कूल जाने लगी तो गर्मी की छुट्टियों में दो या ढाई मास मधुबन के प्राँगण में ही खेला करती थी। यह बाबा की ही कमाल थी जो बाबा ने मुझे उस उम्र में चुन लिया और अपना बना लिया।

चेतन खिलौना और हसनी कुमारी

बाबा मुझे प्यार-से चेतन खिलौना और हसनी कुमारी भी कहा करते थे। मैं हर बात पर हँसा करती थी। सारा समय इधर-से-उधर दौड़ लगाना, यज्ञ के पुराने भाई-बहनों के साथ खेलना, यह मुझे बहुत अच्छा लगता था। खेलती सबके साथ थी पर यज्ञ के बड़ों को पहचानने की समझ उस आयु में भी मुझमें थी। रात को बाबा के पास ही सो जाया करती थी। नींद आ जाने पर बाबा मुझे उठाकर, मेरे बिस्तर पर सुलाकर जाते थे। यह भी मेरा भाग्य है जो इतनी पालना बाबा से मिली।

(शेष भाग पृष्ठ 34 पर)

 सिर्फ मरी हुई मछलियाँ पानी की दिशा के साथ बहती हैं, जीवित नहीं।

1.चरखी दादरी- 'गीता का भगवान तथा पारिवारिक सुख-शान्ति' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.उषा बहन, ब्र.कु.प्रेमलता बहन, विधायक भ्राता राजदीप फोगाट तथा अन्य। **2.खमाणो (लुधियाना)-** विधायक भ्राता गुरप्रीत सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.नीलिमा बहन तथा ब्र.कु.सुरभि बहन। **3.कैथल-** 'आध्यात्मिक ज्ञानोदय द्वारा स्वर्णिम युग' विषयक कार्यक्रम में मंचासीन हैं सत्र न्यायाधीश भ्राता विवेक नासिर, नगरपालिकाध्यक्षा बहन सीमा कश्यप, ब्र.कु.अमीरचंद भाई, ब्र.कु.पुष्पा बहन, ब्र.कु.कविता बहन, ब्र.कु.रानी बहन तथा ब्र.कु.गुरुभजन भाई। **4.पानीपत (ज्ञान-मानसरोवर)-** 'ग्लोबल इनलाइटनमेंट फॉर् गोल्डन एज' विषयक कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.भ्राता मोहन सिंघल, सोशल मीडिया प्रमुख भ्राता दीपक त्यागी, ब्र.कु.भारत भूषण भाई, भ्राता राजीव पुनानी, ब्र.कु.जगपाल भाई तथा अन्य। **5.पलवल (कृष्णा कालोनी)-** कन्या अनाथ आश्रम (प्रेमघर) में गर्म कपड़े वितरित करने के पश्चात् बिजली निगम के एस.डी.ओ.भ्राता अशोक शर्मा, बहन सुमन शर्मा, ऐबल चैरिटेबल ट्रस्ट की उपनिदेशिका बहन रानी लाल, वार्डन बहन चंदा सहगज तथा ब्र.कु.सुदेश बहन ईश्वरीय स्मृति में। **6.रिकांगपियो-** जनरल रिजर्व इंजीनियर फोर्स के कमान्डेन्ट भ्राता अनूप शेरपा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सरस्वती बहन। **7.मण्डी गोविन्दगढ़-** महाविद्यालय में सात अरब सत्कर्मों की महायोजना कार्यक्रम के बाद कॉलेज और स्कूल ट्रस्टी भ्राता नंदकुमार खन्ना, प्राचार्य सुशील जी, ब्र.कु.रामप्रकाश सिंघल, ब्र.कु.प्रवीण तथा सभी टीचर्स ईश्वरीय स्मृति में। **8.मण्डी आदमपुर-** हरियाणा के भाजपा अध्यक्ष भ्राता सुभाष बराला को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सावित्री बहन।

1.चोपड़ा- 'खुशनुमा जीवन' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.उषा बहन, ब्र.कु.मीनाक्षी बहन, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष भ्राता अरुण गुजराती, पूर्व विधायक भ्राता कैलास पाटील, ब्र.कु.दामिनी बहन तथा अन्य। **2.मुम्बई (सान्ताक्रुज-वेस्ट)-** सेवाकेन्द्र पर अपने विचार व्यक्त करते हुए अभिनेता, निर्माता तथा मॉडल भ्राता अर्जुन रामपाल। मंचासीन हैं ब्र.कु.मीरा बहन। **3.मुम्बई (बोरिवली)-** सड़क दुर्घटना पीड़ितों के प्रति विश्व स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित सर्वधर्म सम्मेलन में मंच पर उपस्थित हैं मिस इंडिया टूरिज्म बहन इशिका तनेजा, अभिनेता भ्राता बिवाजीत चटर्जी, मुख्यग्रन्थी भ्राता गुरुसेवक सिंह, व्यापारी भ्राता अमीर अली तथा ब्र.कु.दिव्यप्रभा बहन। **4.पुणे (धनकवडी)-** 'श्रीमद् भगवद्गीता - जीवन जीने की कला' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रो.खैरे, ब्र.कु.वीना बहन, ब्र.कु.नलिनी बहन, ब्र.कु.सुलभा बहन तथा अन्य। **5.मौदा-** अखिल भारतीय बस प्रदर्शनी अभियान का उद्घाटन करते हुए व्यापारी संगठन अध्यक्ष भ्राता नाना इंगले, उपाई संस्था प्रमुख भ्राता विनय चौधरी, पंचायत के सी.ओ.भ्राता रमाकांत डाके, पूर्व कृषि सभापति भ्राता एकनाथ मदनकर, ब्र.कु.कल्पेश भाई, ब्र.कु.मनिषा बहन, ब्र.कु प्रतिभा बहन तथा अन्य। **6.मुम्बई (मलाड)-** संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित सड़क दुर्घटना पीड़ितों प्रति विश्व स्मृति दिवस कार्यक्रम में श्रद्धांजलि देते हुए ब्र.कु.नीरजा बहन, रेडियोलॉजिस्ट डॉ.जयेश शाह, डॉ.उन्नति शाह, ब्र.कु.कुन्ती बहन, पार्षद बहन दक्षा पटेल तथा अन्य। **7.उमरेड-** अखिल भारतीय प्रदर्शनी बस अभियान के उपलक्ष्य में निकाली गई शोभा यात्रा में उपस्थित हैं ब्र.कु.टीना बहन, ब्र.कु प्रतिभा बहन, ब्र.कु.दीपा बहन, नगराध्यक्षा बहन भदोरिया, पूर्व नगराध्यक्षा सुमनताई इटनकर, ब्र.कु.रेखा बहन तथा ब्र.कु.भाग्यश्री बहन। **8.मुम्बई (डिंडोशी)-** संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित सड़क दुर्घटना पीड़ितों प्रति विश्व स्मृति दिवस कार्यक्रम में श्रद्धांजलि देते हुए पुलिस स्टाफ, ब्र.कु.धनश्री बहन तथा ब्र.कु.विनोद भाई।

(पृष्ठ 31 का शेष भाग)

सेवा करनी सिखाई बाबा ने

प्यारे ब्रह्मा बाबा ने उस आयु में भी मुझे बहुत कुछ सिखाया। इस संदर्भ में मैं एक घटना सुनाना चाहती हूँ कि बाबा कैसे बच्चों को व्यस्त कर दिया करते थे। बाबा बहुत लम्बे और सुन्दर व्यक्तित्व वाले थे। वो मुझे अपने साथ पाण्डव भवन की झोपड़ी वाले बगीचे में ले जाते थे और मुझे व्यस्त करने के लिए कहते थे – बच्ची, देखो चारों तरफ कितने पत्ते बिखरे हैं। जाओ, इन पत्तों को उठाओ। बच्ची, यज्ञ की सेवा करोगी ना, करोगी तो मेवा मिलेगी। बगीचे के कोने में टोकरी होती थी, उसमें सूखे पत्ते डालने होते थे। मैं दो-चार पत्ते उठाती थी, टोकरी में डालती थी और कहती थी – बाबा, मैंने बगीचा साफ़ कर लिया। तब बाबा 'तोसा' खिलाया करते थे, जो यज्ञ की मनभावन टोली है, जो गॉडली कैप्सूल है।

जब बाबा अव्यक्त हुए

जब बाबा अव्यक्त हुए तब मैं लगभग 6 वर्ष की थी। हिस्ट्री हॉल में बाबा का पार्थिव शरीर रखा था। भाई-बहनें एक-एक मिनट की दृष्टि बाबा से लेते और बाहर चले जाते थे। मुझे इसका पता था कि मेरे बाबा, जो मुझे इतना प्यार करते थे, वो अब नहीं रहे। बाबा के सामने दादी जी बैठी थीं। जब मैं वहाँ से गुजरी तो मैंने पार्थिव देह पर रखे फूल उठाये और खाये, ऐसा मैंने दो-तीन बार किया। तब दादी जी ने मुझे रोका, कहा, यह क्या कर रही हो, ऐसा नहीं करते। तब मैंने बड़ा ही हृदय-स्पर्शी उत्तर दिया, जो कि मुझे अब तक याद है। मैंने दादी जी को कहा, दादी जी, मुझे और कुछ याद नहीं रहेगा तो यह तो याद रहेगा कि मैंने पार्थिव देह से फूल उठाकर खाये थे। दादी जी के मना करने के बाद फिर मैं फूल उठाने नहीं गई परन्तु जब फूल की एक-एक पत्ती मैंने खाई तो अन्दर में याद कर रही थी कि बाबा, आपने इतना प्यार दिया, आप कैसे चले गये? ये सब मेरी समझ से बाहर था।

बाबा के जाने के बाद दीदी, दादी और बड़ी बहनों के स्नेह में मैं आगे बढ़ती रही। दादी प्रकाशमणि जी कहती थी कि जिस दिन आप समर्पित होंगी, मैं रेवड़ियाँ बाँटूँगी। यज्ञ में मेरा इतना आना-जाना था परन्तु मैं बहुत नाजुक थी, नजाकतों के साथ पली-बढ़ी थी। काफी फैशनेबल भी थी। इसलिए सबको लगने लगा था कि यह ब्रह्माकुमारी नहीं बन सकती, इतना त्याग का जीवन यह नहीं जी सकती। दिन में तीन-चार ड्रेस बदले, चार सब्जियों से खाना खाये, उसके लिए एक सब्जी से खाना कैसे सम्भव होगा?

खुशी की रेवड़ियाँ

जब मैं पहली बार सेन्टर पर रहने के लिए आई थी, मुझे घीया की सब्जी के साथ चपाती खाने को मिली थी। मैं सोचने लगी, कैसे खाऊँ, क्या यह भोजन अन्दर जायेगा। परन्तु बहनों के प्यार की कमाल थी, मैं ढलती चली गई। बड़ों की दुआओं से शक्तिशाली बनती गई और 3 अक्तूबर, 1987 को मैंने अपना पूरा जीवन यज्ञ में समर्पित कर दिया। समर्पण समारोह मधुबन में हुआ। मैंने दादी जी को याद दिलाया कि रेवड़ियाँ बाँटिये। तब दादी जी ने सभा के बीच में कहा कि 'ये ख़ुशी की रेवड़ियाँ कितनी मीठी हैं, मैं बहुत खुश हूँ कि चन्द्रकला बाबा के समक्ष जीवन समर्पित कर रही है।'

मैं बहुत खुशनसीब हूँ, बड़ों के प्यार में पलकर बड़ी हुई हूँ। शायद ही कोई होगा, जिसने मेरे जितना प्यार पाया होगा। ■■■

सदस्यता शुल्क:

(भारत) वार्षिक: 100 /- आजीवन : 2,000 /-
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510
(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription: **Bank**: State Bank of India, **A/c Holder Name :** Gyanamrit, **A/c No:** 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan, **IFSC Code**: SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile: 09414006904, 09414423949, **Email:** hindigyanamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, न्यु ज्ञानामृत भवन, भुजेला, पो. भारजा-307032, जिला-सिरोही में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।
मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, **सम्पादक** - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन, **सह-सम्पादक** - ब्र.कु. सन्तोष, शान्तिवन।

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :
E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in

1

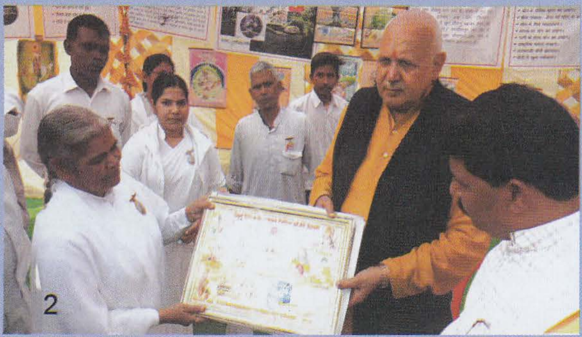
2

3

4

5

6

7

8

1.न्यू पनवेल- 'एक कदम कैंसर से बचाव की ओर' अभियान का उद्‌घाटन करते हुए महाराष्ट्र के सार्वजनिक आरोग्य व परिवार कल्याण मंत्री डॉ.दीपक सावंत, ब्र.कु.संतोष बहन, महापौर डॉ.कविता बहन चौथमोल, आयुक्त भ्राता गणेश देशमुख, ब्र.कु.तारा बहन तथा अन्य। **2.आजमगढ़-** कृषि मेले में लगी प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री भ्राता सूर्य प्रताप शाही को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रंजना बहन। **3.रीवा-** उत्तर प्रदेश की केबिनेट मंत्री बहन रीता देवी बहुगुणा जोशी, ब्र.कु.निर्मला बहन को मातृशक्ति सम्मान से सम्मानित करते हुए। **4.कूचबिहार-** पश्चिम बंगाल के वनमन्त्री भ्राता बी.के.बर्मन को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.सम्पा बहन तथा अन्य। **5.महेसाना-** 'इन्नर पीस इन्नर पावर' विषयक कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए गुजरात के उपमुख्यमंत्री नितिन भाई पटेल, पूर्व सांसद भ्राता जीवा भाई पटेल, ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.डॉ.बनारसीलाल भाई तथा ब्र.कु.कुसुम बहन। **6.गुमला-** जनजातीय मामलों के केन्द्रीय राज्यमंत्री भ्राता सुदर्शन भगत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शान्ति बहन। **7.भावनगर-** विश्व मधुमेह दिवस कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए स्टैन्डिंग कमेटी के अध्यक्ष भ्राता युवराज सिंह, भावनगर विश्वविद्यालय के उप-कुलपति गिरीश भाई वाघानी, डॉ.श्रीमंत साहू तथा ब्र.कु.तृप्ति बहन। **8.कनाडा-** गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति की ओर से एप्रीसिएशन अवार्ड प्राप्त करते हुए ब्र.कु.बिन्नी बहन।

RNI No.10563/1965. Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50. Issue : January, 2019.

नववर्ष के प्रति दादी जानकी जी का शुभ सन्देश

सर्व के मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता, परम सद्गुरु भोलेनाथ शिव के अति स्नेही, अति प्रिय संतान भाइयो और बहनो,

नवयुग आगमन की शुभ वेला में, इस पुरानी दुनिया के नए वर्ष की हार्दिक बधाइयाँ!

कालचक्र का सुनहरा सतयुग धरा पर अवतरित होने को है। उसके स्वागत के लिए आइये मन, वचन, कर्म को स्वर्णिम बना लें। मानव जीवन का बीज है विचार। हमारा एक-एक विचार हमारे भाग्य रूपी भवन का निर्माण कर रहा है। अतः मन के ऊँचे, महान, शक्तिशाली विचारों से हम वातावरण को शक्तिशाली, सकारात्मक और निर्विघ्न बनाएँ। सबके गुण-दर्शन करें। शिवबाबा को सच्चे दिल से याद करें तो किसी फरियाद की आवश्यकता नहीं रहेगी। ईश्वरीय याद सबको मित्र बनाने वाली है।

समय की मांग है कि सुख-शान्ति की प्यासी आत्माओं की पुकार सुनें और उपकार करें। कल किसने देखा है, जो करना है वो अब कर लें। पुरानी और पराई बातों को विदाई देकर निर्मल भावों के साथ नव वर्ष का स्वागत करें। एक बल, एक भरोसे के आधार पर पवित्रता रूपी स्वधर्म में टिके रहें। पवित्रता ही सुख-शान्ति की जननी है।

पुराने और नए वर्ष के इस संधिकाल में 'सदा विजयी भव' के वरदान को आत्मसात करने की कोटी-कोटी बधाइयाँ आप स्वीकार करें। सभी भाई-बहनों को नए वर्ष और नए युग की बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो।

आपकी दैवी बहन

ब्र.कु.जानकी